संवाहिका

चौमासा ई-पत्रिका

वर्ष-01, अंक-03, मार्च-जून सन् 2022-23



श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज

गोण्डा (अवध)



रेडक्रॉस के वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में छात्रा स्वयंसेवक



18 अक्टूबर 2022 को संचारी रोग नियंत्रण अभियान में उपस्थित अतिथिगण



1 दिसंबर 2022 को विश्व एड्स दिवस के अवसर पर उपस्थित स्वयंसेवक



19 मार्च 2023 को आकस्मिक चिकित्सा शिविर के अवसर पर उपस्थित अतिथिगण

संवाहिका

चौमासा ई-पत्रिका

वर्ष-01 अंक-03 मार्च-जून सन् 2022-23

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।।

(ऋग्वेद)

हिंदी अनुवाद :

हम सब एक साथ चलें; एक साथ बोलें; हमारे मन एक हों। प्राचीन समय में देवताओं का ऐसा आचरण रहा इसी कारण वे वंदनीय हैं।

श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज
गोण्डा (अवध)

संवाहिका परिवार

संरक्षक

प्रो० रवीन्द्र कुमार
प्राचार्य

संपादक

प्रो० जय शंकर तिवारी
हिंदी विभाग

सह संपादक

अच्युत शुक्ल
असि० प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग

संपादक मंडल

डॉ० नीरज यादव
असि० प्रोफ़ेसर, बी.एड. विभाग

डॉ. पुष्यमित्र मिश्र
असि० प्रोफ़ेसर, रसायन विज्ञान विभाग

डॉ. परवेज आलम
असि० प्रोफ़ेसर, भूगोल विभाग

डॉ. वंदना भारतीय
असि० प्रोफ़ेसर, अंग्रेजी विभाग

डॉ. अजीत कुमार मिश्र
असि० प्रोफ़ेसर, भूगोल विभाग

डॉ. शैलजा सिंह
असि० प्रोफ़ेसर, बी.बी.ए. विभाग

डॉ. हरीश कुमार शुक्ल
असि० प्रोफ़ेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग

विद्यार्थी संपादक

रोशनी दूबे

पुष्कर बाबू

जीतेश कान्त पाण्डेय

श्रवण कुमार वर्मा

शुभ्रा

हरिओम मिश्र

अरुणेश शुक्ल

हर्षजीत सिंह

महविश मेराज़

कोमल मिश्रा

प्रकाशक

प्राचार्य, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा (अवध)

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता से सम्बन्धित सम्पूर्ण दायित्व तत्सम्बन्धित रचनाकारों का है, सम्पादक मण्डल का नहीं

महाविद्यालय गीत

यह ज्ञानपीठ अति न्यारा है, इस भू को नमन हमारा है।
सरस्वती का पावन मंदिर केंद्र समर्पण व श्रद्धामय।
हम सब जन इसके अर्चक हैं, यह आराध्य हमारा है।। इस भू को नमन --।

पातक-भंजक पुण्यभूमि है, चेतन का अनुपम उद्यान।
साधक की साधना भूमि यह सद्गुरु चरण तुम्हारा है।। इस भू को नमन --।

बौद्धों की यह दिव्यस्थली सभी धर्म का मर्म स्थान।
मस्जिद व मीनार मजहबी सिक्खों का गुरुद्वारा है।। इस भू को नमन --।

तिमिराच्छादित अंधलोक का भुवन-भास्कर अग्नि समान।
ज्ञान-प्रकाशक नाभिक बनकर, कैसी ज्योति पसारा है।। इस भू को नमन --।

स्वच्छ प्रशासन सुंदर शासन, शिक्षा का सर्वोच्च सिंहासन।
गोण्डा की इस पुण्य भूमि पर, जैसे चांद सितारा है।। इस भू को नमन --।

मुर्शिद की यह तपोभूमि, जिज्ञासु जनों का अभयासन।
सुस्वरूप का सृजनहार, सद् वैभव का रखवारा है।। इस भू को नमन --।

इसी भूमि को पावन करने, आए ऋषि मुनि सिद्ध अनेक।
उन्हीं विचारक ऋषि-मुनियों की यह तो सिद्धि अपारा है।। इस भू को नमन --।

नीति-रीति की धुरी सरीखा, संयम का संधान बिंदु यह।
वेद-पुराणों का निचोड़ यह, वेदत्रयी का सारा है।। इस भू को नमन --।

च्यवन श्रृंग यमदग्नि पराशर, परशुराम पातंजलि शौनक।
तुलसी सहजानंद आदि की, बोधमयी संसारा है।। इस भू को नमन --।

रघु दिलीप की चिन्मय धरती, सरयू शुचि सलिला सम्पन्न।
दिव्य लक्ष्य हित अडिग चाह का आकाशी ध्रुव तारा है।। इस भू को नमन --।

अन्न प्राण से अति ऊर्जस्वित, परमानंद सुखों की खान।
चेतन की चेतनामयी यह, शक्ति रुपिणी धारा है। इस भू को नमन --।

दिव्य पुरुष की अनुपम रचना, अनुशासन का गौरव गान।
शास्त्री जी की पुण्यात्मा ने, इसको बहुत सँवारा है।। इस भू को नमन --।

प्राचार्य की लेखनी से



यह हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की ई-पत्रिका 'संवाहिका' का यह अंक ग्रीष्म ऋतु के तपन काल में 'शीतल मंद बयार' की तरह प्रकाशित हुआ है। यह अंक न केवल ग्रीष्मकालीन ऊर्जा और उसके उत्साह को समर्पित है, बल्कि विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, कल्पनाशक्ति और नवीन दृष्टिकोण को दर्शाता है।

किसी भी संस्थान की पत्रिका वहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और विद्यार्थियों के उज्ज्वल विचारों का प्रतीक होती है। इस अंक के माध्यम से महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने अपनी भावनाओं को विविध रूपों में व्यक्त किया है। मैं विद्यार्थियों को विशेष साधुवाद इसलिए भी दूंगा कि उन्होंने परीक्षा की तैयारी के साथ ही अपनी रचनाधर्मिता को भी जाग्रत रखा है।

विद्यार्थियों की लेखन क्षमता उनके बौद्धिक और रचनात्मक विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेखन के माध्यम से वे अपने विचारों, भावनाओं, और ज्ञान को स्पष्ट और प्रभावी तरीके से व्यक्त कर सकते हैं। अच्छी लेखन क्षमता जहाँ विद्यार्थियों को बेहतर संप्रेषक बनाती है, वहीं उनकी अकादमिक सफलता और पेशेवर जीवन में मदद करती है। लेखन से वे विचारों की सुसंगति, शब्दावली का सही उपयोग, और संरचनात्मक सोच में दक्ष होते हैं। यह उन्हें आत्माभिव्यक्ति के साथ-साथ समग्र मानसिक विकास में भी योगदान करता है। नियमित अभ्यास और सही मार्गदर्शन से लेखन-क्षमता में सुधार संभव है।

मन में उठने वाले विचारों को लिपिबद्ध करना लेखन के अभ्यास से ही संपन्न होता है। सच कहें तो, लेखन एक साधना है। ऐसा बहुत बार देखने में आता है कि कुछ विद्यार्थी बोलने में अधिक दक्ष होते हैं पर उनका लेखन पक्ष कमजोर होता है। महाविद्यालय से निकलने वाली ये पत्रिकाएं आपकी लेखन-क्षमता को सशक्त बना सकती हैं, बशर्ते आप निस्संकोच लिखना प्रारंभ करें।

मैं संपादक मंडल सहित सभी विद्यार्थियों को हृदय से बधाई देता हूँ, जिनके अथक प्रयासों से यह ई-पत्रिका संभव हो पाई है। मुझे विश्वास है कि यह अंक सभी के लिए प्रेरणादायक होगा और आने वाले समय में भी सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करता रहेगा।

प्रो० रवीन्द्र कुमार
प्राचार्य

संपादकीय



गर्मी का मौसम आते ही तापमान में तेजी से वृद्धि होने लगती है, और इस तपते मौसम में छात्रों की परीक्षाएं भी आ जाती हैं । यह समय छात्रों के लिए शारीरिक और मानसिक दोनों दृष्टियों से बेहद चुनौतीपूर्ण होता है। बाहर की तेज धूप, गर्म हवाएँ, और लगातार बढ़ता तापमान शारीरिक थकान को बढ़ाते हैं, वहीं परीक्षा की तैयारी और परिणामों का मानसिक दबाव भी छात्रों को परेशान करता है।

गर्मी के मौसम में अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करना आसान नहीं होता। अत्यधिक गर्मी के कारण सुस्ती, थकान, और कभी-कभी बीमारियाँ भी छात्रों के प्रदर्शन को प्रभावित करती हैं। ऐसे में छात्रों के लिए आवश्यक है कि वे पढ़ाई के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य का भी ख्याल रखें। पर्याप्त पानी पीना, पौष्टिक भोजन करना और नियमित अंतराल पर ब्रेक लेना उनके लिए जरूरी हो जाता है ताकि शरीर और दिमाग दोनों तरोताजा रहें।

इस समय माता-पिता और शिक्षकों की भी अहम भूमिका होती है। उन्हें छात्रों पर दबाव डालने के बजाय उन्हें प्रेरित करना चाहिए। यह जरूरी है कि वे बच्चों को समझाएँ कि परीक्षाएँ जीवन का एक हिस्सा हैं, लेकिन उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य अधिक महत्वपूर्ण है। परीक्षाओं में अच्छे परिणाम आवश्यक हैं, लेकिन छात्रों को यह भी महसूस होना चाहिए कि यह जीवन की अंतिम परीक्षा नहीं है।

आखिरकार, गर्मी और परीक्षाएँ दोनों ही अस्थायी हैं। संयम, धैर्य और सकारात्मक दृष्टिकोण से इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। छात्रों को इस समय का सामना आत्मविश्वास के साथ करना चाहिए, ताकि वे सफलतापूर्वक इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो सकें।

'संवाहिका' ई-पत्रिका का यह तीसरा अंक महाविद्यालय के विद्यार्थियों और प्राध्यापकों के सम्मिलित योगदान से आ पाया है। हमें उम्मीद है कि आगे भी आप सबका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

डॉ. जयशंकर तिवारी

संपादक, संवाहिका

अनुक्रम

क्रम	शीर्षक एवं लेखक		पृष्ठ संख्या
1.	महिला सशक्तीकरण : कानून एवं जागरुकता (लेख)	- प्रो0 शशिबाला	1
2.	कैरियर मार्गदर्शन और रोजगार के अवसर (लेख)	- डॉ0 हरीश कुमार शुक्ल	4
3.	स्काउटिंग : एक परिचय (लघु लेख)	- प्रियंका सिंह	6
4.	सरस्वती वंदना (कविता)	- अरुणेश शुक्ला 'अश्रु'	7
5.	सितम-ए-ज़िंदगी (कविता)		7
6.	निगाहों के फाँस में (कविता)		8
7	आज़ादी का अमृत महोत्सव (कविता)		8
8.	एक कोर्स ऐसा भी कराया जाए (कविता) और व्यंग्य	- मनीष कुमार शर्मा	9
9.	निर्बंध ज़िंदगी (कविता)	- दिव्या	9
10.	वसुधैव कुटुंबकम् (लेख)	- वेद प्रकाश	10
11.	समाज के निर्माण में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान (लेख)	- गार्गी मिश्रा	12
12.	INDIAN NAMING SYSTEM (Article)	- Prof. V.CH.N.K. Srinivasa Rao	14
13.	The Power of Inspiration and Motivation (Article)	- Shishir Tripathi	16
14.	English as a Global Language	- Dr. Vandana Bhartiya	18
15.	मानव सेवा ही सच्चा धर्म (रेडक्रॉस इकाई – रपट)	- प्रो0 राजीव कुमार अग्रवाल	20
16.	योग शिविर : एक विहंगम दृष्टि	- प्रो0 आर0 बी0 सिंह बघेल	23
17.	प्री पीएच0 डी0 कोर्स वर्क, अर्थशास्त्र : रपट	- प्रो0 जे0 बी0 पाल	25
18.	विचार गोष्ठी : रपट (बी. एड. विभाग)	- प्रो0 श्याम बहादुर सिंह	26
19.	क्रियात्मक शोध संगोष्ठी : रपट		29

महिला सशक्तीकरण : कानून एवं जागरूकता

प्रो. शशि बाला
समाजशास्त्र विभाग



नारी शक्ति देश व समाज के निर्माण में हमेशा अपना महत्वपूर्ण योगदान निभाती रही है, प्राचीन इतिहास को उठाकर अगर हम देखें तो वहाँ भी बहुत सी महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरुषों से बहुत आगे थीं, हालांकि ऐसी बहुत-सी स्त्रियां भी रही हैं जो पितृसत्ता के आगे बेबस थीं। आज की महिला हर क्षेत्र में बहुत पावरफुल है, उसकी सोच में व्यापक बदलाव आया है, उसमें स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता बढ़ी है, जो सुखद संकेत है। नारी मुक्ति के तमाम घिसे-पिटे भाषणों से ऊपर उठकर आज एक नारी चुनौती का डटकर सामना करने की हिम्मत रखती है। घर के चूल्हे-चौके से कोर्टरूम तक का स्कर तय करने में महिलाओं ने अपने हक की लड़ाई लड़ी और उसमें सफलता भी हासिल की, आज महिलाओं ने वह मुकाम हासिल कर लिया है, जिन्हें ध्यान में रखकर न सिर्फ कानूनों में संशोधन भी किया जा रहा है बल्कि कई नये कानून भी उन्हें स्वावलम्बी बनाने के लिए बन रहे हैं। उनकी सुरक्षा, भरण-पोषण, पहचान, अधिकार और सम्मान की खातिर भारतीय कानून / संविधान में कई बदलाव भी किए गए हैं, ऐसे ही कुछ प्रमुख कानूनी फैसले जो महिलाओं के हक में हुए जो उन्हें और भी सशक्त बनाने में सहायता प्रदान करता है-

1. घरेलू हिंसा से हर स्त्री सुरक्षित -

आंकड़े बताते हैं कि भारत में एक तिहाई महिलाएं किसी न किसी रूप में घरेलू हिंसा का शिकार होती हैं। घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005 के तहत हर स्त्री को सुरक्षा प्रदान की गयी है, इसमें माँ, बहन, पत्नी, रिश्तेदार, कुक, मेड, आया जैसी सभी स्त्रियाँ शामिल है। इस कानून के तहत इन सभी स्त्रियों को शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, मौखिक, भावनात्मक और यौन-अत्याचार से बचाने का प्रयास किया गया है।

2. पिता की सम्पत्ति पर समान अधिकार -

पहले हिन्दू सेक्शन एक्ट, 1956 के अनुसार पैतृक सम्पत्ति में बेंटी का कोई अधिकार नही होता था, जिसके कारण कई लड़कियाँ दहेज प्रथा जैसी कुप्रथा का आसानी से शिकार बन जाती थी। इस कुप्रथा पर रोक लगाने के उद्देश्य से सन् 2005 में इस कानून में संशोधन करके पैतृक सम्पत्ति में बेटे-बेटी का समान अधिकार कर दिया गया है, पर व्यावहारिक तौर पर आज भी हमारे समाज में बेटियां अपने इस अधिकार का प्रयोग अर्थात अपने हक का प्रयोग बहुत कम ही करती हैं।

3. सरनेम बनाए रखने की आजादी -

अब लड़कियों को पूरी आजादी है कि शादी के बाद भी वे शादी से पहले वाला सरनेम रख सकती हैं, अक्सर समस्या तब आती है जब लड़कियाँ शादी के बाद अपना सरनेम बदलती हैं, और जब कभी तलाक की नौबत आती है तो उनका काफी समय तलाक के बाद इन्हीं झंझटों में बर्बाद हो जाता है। उन्हें न सिर्फ अपना पासपोर्ट रिन्यू कराना पड़ता था, बल्कि बैंक अकाउंट, राशन कार्ड, फ्लैट के कागजात, वोटर कार्ड और यहाँ

तक कि अपना हस्ताक्षर भी बदलना पड़ता था, पर अब नये कानून से ऐसा नही होगा।

वर्ष 2011 में ही पुणे पासपोर्ट आफिस ने विधि मंत्रालय द्वारा इस मामले पर हरी झंडी दिखाये जाने के बाद महिलाओं को यह अधिकार दे दिया है कि वो तलाक के बाद भी अपने पति का सरनेम रख सकती है।

4. लिव इन रिलेशनशिप में भी मिलेगा भरण-पोषण -

शहरों में लिव इन रिलेशनशिप का चलन बहुत तेजी से बढ़ रहा है। वहीं हमारें गाँवों में कुछ लोक प्रथाएँ भी ऐसी हैं, जो महिलाओं को शादी के बाद भी पत्नी का अधिकार नही देतीं, ऐसे में समस्या तब आ जाती है जब बात अधिकारों की होती है, लेकिन लगातार बढ़ते ऐसे मामलों के कारण 2010 में सुप्रीम कोर्ट ने 'चनमुनिया बनाम वीरेन्द्र कुमार सिंह कुशवाहा केस में यह महत्वपूर्ण फैसला लिया कि 'लिव इन रिलेशनशिप' मे रहने वाली महिलाओं को वो सारी राहतें व अधिकार मिलेंगे, जो किसी भी महिला को घरेलू हिंसा अधिनियम-2005 के तहत दिए गए है।

5. अभिभावक बनने का अधिकार मिला -

वर्ष-2018 में संसद ने निजी कानून (संशोधन) बिल पारित किया, इस बिल को पारित करने के लिए गार्जियन एण्ड वॉर्ड्स एक्ट और हिन्दू एडॉप्शन एण्ड मेंटेनेंस एक्ट, 1956 में संशोधन किया गया। इस संशोधन के बाद अब कानूनी रूप से माँ को 3 संतान पर (गोद लिया हुआ हो या उनकी अपनी) पिता के बराबर हक मिल गया है। इसके अलावा यह कानून उन महिलाओं के लिए भी फायदेमंद है, जो तलाक की प्रक्रिया में हैं, और बच्चा गोद लेना चाहती हैं वो पति की सहमति से बच्चा गोद ले सकती है। लेकिन यदि पति ने धर्म-परिवर्तन कर लिया है या उसकी दिमागी हालत ठीक नही है तो पति की सहमति के बिना भी महिला बच्चा गोद ले सकती है। अब इस कानून का उपयोग कर अविवाहित, तलाकशुदा या विधवा स्त्री भी बच्चा गोद ले सकती है।

6. मातृत्व अवकाश की अवधि बढ़ी -

सरकारी कार्यालयों में कार्यरत महिलाओं की 2008 में मैटर्निटी अवकाश यानि मातृत्व अवकाश को 135 दिनों से बढ़ाकर 180 दिनों के लिये कर दिया गया है। महिलाओं को न सिर्फ 06 माह की मैटर्निटी लीव मिली बल्कि बच्चों की देखभाल व सुरक्षा के लिए 02 साल तक चाइल्ड केयर की वैतनिक छुट्टियाँ भी दी गयी है, जिन्हें वे अपनी इच्छानुसार बच्चों के लिए 18 साल की उम्र तक कभी भी ले सकती है।

7. सेना में मिला स्थायी कमीशन -

वर्ष-2010 में दिल्ली हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में केन्द्र सरकार को आदेश दिया कि सेना में स्त्रियों को स्थायी कमीशन दिया जाएगा, यह फैसला सैन्य सेवा में कार्यरत और अवकाश प्राप्त लगभग 60 महिला अधिकारियों की याचिका के बाद लिया गया, महिलाओं ने याचिका में मांग की थी कि उन्हें भी पुरुषों की तरह स्थायी कमीशन प्राप्त होना चाहिए।

8. मुकदमा दायर करना हुआ आसान -

हिन्दू मैरिज एक्ट-1955 के अनुसार अगर कोई महिला अपने पति के खिलाफ मुकदमा दायर करना चाहती थी तो उसे उस जगह मुकदमा दायर करना पड़ता था, जहाँ उसकी शादी हुई थी या फिर आखिरी बार दोनों साथ रह रहे थे, जिसके कारण भागदौड़ इतनी ज्यादा हो जाती थी कि कई बार महिलाएँ विवश होकर अपने अधिकारों का खुद ही गला घोंट देती थी। इस कानून में 2003 में हुए संशोधन के अनुसार-कोई भी पत्नी अपने पति के खिलाफ वहीं पर मुकदमा दायर कर सकती है-जहाँ पर वर्तमान समय में रह रही है। इस संशोधन ने अत्याचार के खिलाफ लड़ने के लिए महिलाओं का हौसला ही बढ़ाया है।

9. कार्यस्थल पर यौन-उत्पीड़न से मुक्ति -

सुप्रीम कोर्ट ने 1997 में पहली बार इस बात की मान्यता दी कि कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ छेड़खानी मानवीय अधिकारों का उल्लंघन है। विशाखा बनाम स्टेट ऑफ राजस्थान केस के तहत सुप्रीम कोर्ट ने कुछ गाइडलाइन्स जारी कीं, जिसके तहत एम्लॉयर की यह जिम्मेदारी होती है कि वह अपने संस्थान में काम करने वाली सभी स्त्रियों को काम करने लायक सुरक्षित माहौल दें, इस गाइड लाइन में कार्यस्थल पर सुरक्षित माहौल, महिलाओं की सुविधा का ध्यान, शिकायत समिति का गठन, जागरूकता फैलाना आदि कई महत्वपूर्ण बातें शामिल है।

10. तेजाब डालने पर मिलेगी कठोर सजा -

महिला के चेहरे पर तेजाब डालकर किसी भी महिला के अस्तित्व को घायल करके अक्सर लोग बड़े आसानी से छूट जाते थे। लॉ कमीशन ऑफ इंडिया ने सुप्रीम कोर्ट को 2009 में सौंपी अपनी रिपोर्ट में एसिड फेंकने वालों के लिए सख्त कानून बनाने की वकालत की। इसके तहत तेजाब डालकर बदला लेने वाले लोगों को कम से कम 10 वर्ष की सजा और 10 लाख रूपयें के जुर्माने की सजा तय की गयी है। यदि तेजाब से व्यक्ति को नुकसान न भी हुआ हो, तो भी पकड़े जाने पर इसकी सजा 5 साल होगी।

11. बाल-यौन शोषण के मामले में सुरक्षा व्यवस्था -

वर्ष 2004 में साक्षी बनाम इंडिया केस में सुप्रीम कोर्ट ने यह आदेश दिया कि बाल यौन-शोषण मामलों में ट्रायल के दौरान कार्यवाही या गाइड-लाइन्स अपनाई जाय। इसके अनुसार ऐसे मामलों की कार्यवाही सार्वजनिक न होकर बन्द कमरों में हो और ऐसे इंतजाम किए जाएँ जिससे पीड़ितों को अपराधी का चेहरा न देखना पड़े और कोर्ट में बयान देते समय पर्याप्त समय दिया जाय।

12. पति की प्रापर्टी में समान अधिकार -

पिछले कई सालों से महिलाएं यह मांग कर रही हैं कि पति की प्रापर्टी में उन्हें समान अधिकार मिलें, लेकिन ये मामला भी बाकी अन्य मामलों की तरह अंधेरे में ही रहा। अभी तक यह होता आया है कि यदि पति-पत्नी अलग हो जाएँ तो, पत्नियों को भरण-पोषण भत्ता से ही काम चलाना पड़ता था, लेकिन अब इस नये कानून के पारित हो जाने के बाद तलाक के बाद भी पत्नियां पति की प्रापर्टी में समान अधिकार प्राप्त कर सकेगी। हाल ही में महाराष्ट्र राज्य महिला आयोग में पति की सम्पत्ति में पत्नी के समान अधिकार के लिए बिल पेश किया गया, आशा है जल्द ही महाराष्ट्र सरकार इस बिल को पास करके सभी पत्नियों को पति की प्रापर्टी में समान अधिकार दे देगी।

हमारे देश में कानून बहुत हैं, लेकिन न तो लोगों को उनकी जानकारी है और न ही उनको सही तरीके से अमल में लाया जा रहा है। सच्चाई तो यह है कि महिलाओं को तब तक अपने अधिकारों की कोई जानकारी नही होती, जब तक उनके साथ कुछ गलत नही हो जाता। ऐसे में बिना जानकारी के कई बार उन्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। इसलिए हमें भरसक कोशिश करनी चाहिए कि महिलाओं को उनके अधिकारों व कानून के प्रति जागरूक किया जाए, इसके लिए तो सबसे पहले स्वयं महिलाओं को उठना होगा, जागना होगा, विरोध प्रकट करना होगा, तभी वे संकट की स्थितियों से मुक्त हो पाएँगी। दूसरी ओर समस्याग्रस्त महिलाओं को कानूनी सहायता प्रदान करने एवं उनके विवादों को निपटाने के लिए स्वयंसेवी संगठनों को आगे आना होगा और वो मुफ्त में ऐसी पीड़ित महिलाओं की मदद करे एवं उन्हें उचित सलाह देकर उनका मार्ग दर्शन करें, जिससे वह पुन: सुखी जीवन व्यतीत कर सकें।

कैरियर मार्गदर्शन और रोजगार के अवसर
(Career guidance and job opportunities)

डॉ. हरीश कुमार शुक्ल
असि. प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग

प्रस्तावना : भारत एक विस्तृत देश है। यह विश्व का सबसे बड़ा जनसंख्या वाला देश है। यहाँ निवास करने वाली जनसंख्या में सर्वाधिक जनसंख्या युवक-युवतियों की है। युवावस्था में कैरियर को हर व्यक्ति के जीवन में बहुत बड़ा महत्त्व दिया जाता है। शुरूआत से ही हमें हमारे अध्ययनों पर ध्यान केंद्रित करने और परीक्षाओं में अच्छी तरह से अंक हासिल करने के लिए कहा जाता है। ऐसा करने का मकसद मजबूत आधार बनाना और अच्छे ग्रेड लाना है। जो आपको एक आकर्षक कैरियर बनाने में मदद करेगा।

कैरियर किसी भी व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह किसी भी इंसान की जीवन-शैली का नेतृत्व करता है जिससे समाज में उसकी स्थिति निर्धारित होती है। जहाँ हर कोई एक अच्छे जीवन के लिए सपने देखता है, वहीं हर किसी का मजबूत कैरियर आम तौर पर किसी व्यक्ति के जीवन के पेशेवर पहलू से जुड़ा होता है। हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात हमें विज्ञान, वाणिज्य, कृषि और मानविकी स्ट्रीम के बीच चयन करना पड़ता है जो बाद में मुख्य रूप से हमारे करियर के मार्ग को प्रभावित करता है।

आपकी रुचि और अभिक्षमता :- मार्गदर्शन करने वाले व्यक्ति को बालक- बालिकाओं की रुचि और दक्षता का आकलन करना अत्यंत आवश्यक है। कैरियर किसी भी व्यक्ति के जीवन का अहम हिस्सा होता है; ये समझने की कोशिश करें कि आपकी रुचि किसमें है। अपितु केवल किसी विशेष क्षेत्र में रुचि रखना काफी नहीं है। इसके अलावा यह भी देखना चाहिए कि क्या आप उस विशेष व्यवसाय के लिए अच्छी तरह अनुकूल हैं। यह कहना सही होगा कि यदि आपके हित के क्षेत्र में अच्छे तरह प्रदर्शन करने के लिए आपके पास आवश्यक कौशल और क्षमता है तो आपको ऐसा करने की कोशिश करनी चाहिए।

उपलब्ध अवसर :- आपकी शैक्षणिक योग्यता और अनुभव से मेल खाने वाले विभिन्न प्रकार के अवसर व व्यवसाय हो सकते हैं। इन सभी व्यवसायों की सूची बनाना अच्छा एक अच्छा विचार है।

सूची बनाएँ :- सभी उपलब्ध अवसरों को बेहतर समझने के लिए अपनी सूची बनाएं और उस सूची में से व्यवसाय का चुनाव करें जो आपके लिए सबसे उपयुक्त है। ऐसा करते समय आपको अपने वरिष्ठ और साथ ही उन साथियों से सलाह लेनी चाहिए जो पहले से ही ऐसे पेशे में है।

दसवीं कक्षा के बाद प्रवेश परीक्षाएं :-

1. भारतीय नौसेना में नाविक।
2. मैट्रिक भर्ती (एम.आर.एस.) गैर मैट्रिक भर्ती (एन.एम.आर.एस.) तथा संगीतज्ञ।
3. भारतीय तटरक्षक में नाविक।
4. तकनीकी व गैर तकनीकी ट्रेड में एयरमैन।
5. रेलवे में गैर तकनीकी वर्ग।
6. वोकेशनल स्ट्रीम आईटीआई और पॉलीटेक्निक डिप्लोमा पाठ्यक्रम।
7. रेलवे टिकट कलेक्टर की परीक्षा।

इण्टरमीडिएट के बाद प्रवेश परीक्षाएं :-

1. विज्ञान वर्ग के साथ एनडीए में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा।
2. पीसीएम के साथ आईआईटी संयुक्त प्रवेश परीक्षा।
3. मेडिकल सेवा में प्रवेश पाने के लिए राष्ट्रीय स्तर की नीट परीक्षा।
4. एन सी सी 'सी' सर्टिफिकेट धारण करने वाले

छात्र-छात्राओं के लिए सेना में सीधे भर्ती।

5. सेना में जाने के लिए एस.एस.सी (GD) प्रतियोगी परीक्षा।
6. राज्य स्तरीय सेवा में जाने के लिए यूपी एस. एस.एस.सी प्रतियोगी परीक्षा इत्यादि।
7. उत्तर प्रदेश पुलिस कांस्टेबल की परीक्षा में भी शामिल हो सकते हैं।
8. केन्द्रीय व राज्य के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से स्नातक में प्रवेश पाने करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सी.यू.ई.टी. प्रवेश परीक्षा।

स्नातक स्तर के बाद प्रवेश परीक्षाएं :-

1. आईआईएम में प्रवेश के लिए कैट।
2. व्यावसायिक कोर्स एमबीए, एमसीए, बीसीए व बीबीए इत्यादि।
3. विदेशी विश्वविद्यालयों मे शिक्षा के लिए जी. आर.ई।
4. एम.टेक और एमई के लिए गेट।
5. सिविल सेवा में जाने के लिए संघ लोक सेवा आयोग व राज्य सेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षाएं।
6. बैंको में परिवीक्षाधीन अधिकारी। नाबार्ड बीमा कंपनियों में विकास अधिकारी के लिए प्रवेश परीक्षा।
7. भारतीय रिजर्व बैंक के सेवा चयन बोर्ड के माध्यम से विभिन्न पदों के लिए परीक्षा।
8. राज्यों में बी.एड. कोर्स के लिए प्रवेश परीक्षा।
9. कर्मचारी चयन आयोग की स्नातक स्तरीय प्रतियोगी।

अच्छा बायोडाटा बनाएँ :- एक बार जब ये स्पष्ट कर लें कि आप किस तरह से कैरियर के रास्ते पर चलना चाहते हैं तो अपनी योजना को सफल बनाने के लिए आपको एक अच्छा बायोडाटा लिखना आवश्यक है। अपनी पसंद की नौकरी को पाने में आपका बायोडाटा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है इसीलिए आपको एक अच्छी तैयारी करनी चाहिए।

दक्षता पैदा करें :- जब छात्र-छात्राओं की शैक्षिक योग्यता आपकी पसंद का रोजगार प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है तब आपको व्यावसायिक प्रशिक्षण से गुजरने वाले कुछ अतिरिक्त कौशल की आवश्यकता हो सकती है ऐसे अल्पकालिक प्रशिक्षण और कार्यशालाओं में जाने से संकोच न करें। सरकार द्वारा नि:शुल्क कई क्षेत्रों में कौशल विकास कार्यक्रम के माध्यम से परीक्षित किया जाता है उस प्रशिक्षण को लेकर भी रोजगार पा सकतें हैं।

आधुनिक समय में मानव जीवन में बड़ी तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं आज के बदलते हुए युग के परिणाम स्वरूप जीवन के मूल्यों, मापदंडों और आवश्यकताओं आदि में तीव्रता से परिवर्तन होते हैं आज के वैज्ञानिकता के इस युग में हमें सभी पुरानी विचारधाराएं पिछड़ती हुई दिखाई दे रही है। आज के प्रवेश में कंप्यूटर शिक्षा व तकनीकी शिक्षा तथा कंप्यूटर का उपयोग बहुत आवश्यक है कंप्यूटर का क्षेत्र भी रोजगार का प्रमुख अवसर हो सकता है। आनेवाला समय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का है ऐसे में तकनीकी समझ व कम्प्यूटर की विशेषज्ञता आपको एक अच्छे मुकाम तक पहुंचा सकती है।

जिन्हें स्पोर्ट्स में अभिरुचि हो वे स्कूली शिक्षा से ही विभिन्न खेलों में हिस्सा लेकर और अच्छा प्रदर्शन करके राज्य स्तरीय और राष्ट्र स्तरीय खेल में प्रतिभाग कर सकते हैं। अपने खेल के प्रदर्शन के आधार पर वें स्पोर्ट कोटा का लाभ भी ले सकते हैं।

निष्कर्ष :- आपको अपनी शैक्षणिक योग्यता के आधार पर अपने कैरियर का चयन करना है क्योंकि यह आपके जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ा हुआ है। अपने सभी विकल्पों का अन्वेषण करें, उन लोगों का मार्गदर्शन और सलाह लें जो आपसे अनुभवी हैं और चयन किए गए क्षेत्रों में दक्षता रखते हो। एकबार अपने कैरियर का चुनाव करने के पश्चात उसको पाने के लिए कड़ी मेहनत करें ताकि आप अपनी पसंद के क्षेत्र में जा सके और जीवन का आनंद लें सकें।

स्काउटिंग : एक परिचय

प्रियंका सिंह
बी.एस-सी द्वितीय वर्ष

स्काउटिंग एक संस्था है, जिसमें बच्चों से लेकर बड़ों तक में नैतिकता एवं योग्यता का विकास किया जाता है। भारतवर्ष में एक राष्ट्रीय संस्था की स्थापना 7 नवंबर 1950 को भारतीय राष्ट्रीय स्काउट के रूप में की गई। इसका नाम भारत स्काउट एवं गाइड रखा गया। 15 अगस्त 1951 को गर्ल्स गाइड एसोसिएशन इन इंडिया का समावेश इसमें किया गया। पूरे भारत में एकमात्र संस्था भारत स्काउट एवं गाइड है। प्रत्येक राज्य की स्काउट संस्थाएं इसी राष्ट्रीय संस्था से जुड़ी है।

भारतीय बच्चों को स्काउटिंग में प्रवेश दिलाने का श्रेय श्रीमती एनी बेसेंट को जाता है।

उद्देश्य : स्काउट एवं गाइड का मूल मंत्र सेवा भाव है जिसमें एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना योगदान करते हैं। इसका उद्देश्य बच्चों और युवाओं का सर्वांगीण विकास करना है।

आदर्श वाक्य : संस्था का आदर्श वाक्य 'तैयार रहो, शारीरिक-मानसिक रूप से सतर्क रहो'

लाभ : इस संस्था से समाज को अनेक लाभ हैं। यह संस्था नि:स्वार्थ भाव से मानवता की सेवा करती है। जनता में स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता की भावनाओं को जागृत करती है। इस संस्था का सबसे बड़ा लाभ यह है कि सबके कल्याण में ही अपना कल्याण समझा जाता है और समाज का हित ही अपना हित माना जाता है।

स्वयं के प्रति कर्तव्य : स्वयं के विकास की जिम्मेदारी निभाना।

लोगों के प्रति कर्तव्य : अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठावान रहते हुए स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति, समाज और आपसी सहयोग को बढ़ावा देना।

'इस वर्ष हमारे महाविद्यालय श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज की स्काउट एंड गाइड की इकाई को उसके प्रभारी एवं नेतृत्वकर्ता डॉ. आर बी सिंह बघेल जी द्वारा स्काउट एंड गाइड के दीक्षा कार्यक्रम को स्वामीनारायण छपिया में संपन्न कराया गया एवं इसी के अंतर्गत एक शैक्षिक भ्रमण पृथ्वीनाथ मंदिर पर कराया गया और लोगों के बीच सद्भावना रैली भी निकाली गई, जिससे हम विद्यार्थी लाभान्वित हुए हैं और उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं'।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

हिंदी अनुवाद :
किसी भी शस्त्र द्वारा आत्मा के टुकड़े नहीं किए जा सकते, न ही अग्नि आत्मा को जला सकती है, न ही जल द्वारा उसे गीला किया जा सकता है और न ही वायु इसे सुखा सकती है।

सरस्वती वंदना

अरुणेश शुक्ला 'अश्रु'
बी.ए. तृतीय वर्ष

श्वेत-पुष्पित अंक कोमल,
मातु वंदन कोटि वंदन !!

व्यथित विकसित आत्मा की।
ज्योति रेखा लालिमा सी।।
उठ अकिंचन प्रात से ही।
धूलि-धूसित-शुचित चंदन।।१।।

दृग-अरुण वरदान मंगल।
प्रीति-करुणा-कांति संबल।।
आपकी हे मातु हो जय !
अर्चना रत मनुज-नंदन।।२।।

मृदु तान वीणा है अमर।
अनुभूति का भीषण सफर।।
अश्रु से नि:स्वार्थ पुलकित।
हो मही पर नृत्य-मज्जन।।३।।

ज्ञान हो अनुपम अनूठा।
दंभ हो पाखंड झूठा।।
ध्यान हो चरणों में रूठा।
बस यही वरदान अंकन।।४।।

सितम-ए-जिन्दगी

अरुणेश शुक्ला 'अश्रु'
बी.ए. तृतीय वर्ष

क्या बताऊं किसे? है सभी से गिला।
साथ दुनिया का मुझको कभी न मिला।।
ख्वाहिशें भी जो देखीं ये हालत मेरी।
भूखीं प्यासीं रहीं न निवाला मिला।।१।।

जितने पावन थे चेहरे पुकारे गए।
हम तो अपनों के द्वारा नकारे गए।।
थी कुम्हारों की महफिल सजी एक दिन।
उसमें सोने भी होकर तरासे गए।।२।।

क्या कहूं? वक्त ही जब बुरा कह गया।
टीस उठती रही घाव क्यूं भर गया।।
बात मुझको समझ में तो आए कभी।
प्रश्न लेकिन धरा का धरा रह गया।।३।।

लेखनी क्या लिखी? कुछ समझ न सका।
भाव खुद ही सजाए सो-जग न सका।।
है खफा सारी दुनिया मुझी पर हंसे।
मैं तो अपना बचा क्या? समझ न सका।।४।।

जिन्दगी से मुझे कुछ न हासिल हुआ।
जिसको समझा भंवर वो ही साहिल हुआ।।
भाग्य किससे ठगी? कुछ पता ही नहीं।
मैं तो वंचित अभागों में काबिल हुआ।।५।।

निगाहों के फाँस में

अरुणेश शुक्ला 'अश्रु'
बी.ए. तृतीय वर्ष

कोमल हसीन एक चंचल निगाहों में,
उलझ गया ऐसे फिर सुलझ नहीं पाया हूँ।
काले-काले बालों में मैं ऐसे जाके फँस गया,
तोड़ चक्रव्यूह फिर निकल नहीं पाया हूँ ।।
मीठी-मीठी बातों ने तो राह रोका थक गए,
पांव को जमीन से उठाय नहीं पाया हूँ ।
तन-मन-वचन के घोर शब्द कान पड़े,
बोलना तो छोड़ मुँह हिलाय नहीं पाया हूँ ।।१।।

पांव के घुँघरू धरा से मीठी बात करें,
देख लिया पर मैं दिखाय नहीं पाया हूँ।
तन पर आन अधरों पे मुस्कान लिए,
बोल दिया पर मैं बुलाय नहीं पाया हूँ ।।
मन काँपे हो अधीर तन लेके मीठी पीर,
जान गया पर मैं बताय नहीं पाया हूँ।
आंखों में मिलन और पैर में उमंग देख,
नाच लिया पर मैं नचाय नहीं पाया हूँ ।।२।।

आंखों के इशारे और मन के बुलावे पे वो,
रूठ गई ऐसे मैं मनाय नहीं पाया हूँ ।
उसके आँखों में तीर मेरे नयनों में नीर,
भूल गई मुझे मैं भुलाय नहीं पाया हूं।।
उसके हृदय का सोच मेरे उर का वियोग,
फंस गया ऐसे मैं छुड़ाय नहीं पाया हूं।
आंखों पे कटार और मन में अंगार लिए,
खाय लिया मुझे मैं बचाय नहीं पाया हूँ ।।३।।

आजादी का अमृत महोत्सव

अरुणेश शुक्ला 'अश्रु'
बी.ए. तृतीय वर्ष

वर्ष पचहत्तर महोत्सव है अमृत का,
पूर्ण भाव लेकर समर्पण कीजिए।
प्रेम से छके हों दृग, बहती हो अश्रु धार,
अंजुरि में पुष्प धरि अर्पण कीजिए।।
देश के लिए हो गान, बजती हो मृदु तान,
कोटि कंठ एक साथ घर्षण कीजिए।
छोड़ जाति-पांति, ऊंच-नीच, धर्म, वेषभूषा,
सब मिलि एक-साथ तर्पण कीजिए।।१।।
देश की सुरक्षा में स्वयं नहीं रहि पाए,
आज वही नाम हम सब गोहराइत है।
रक्त दिए, शीश दिए, देह दिए भारत को,
आज वही काम हम सब दोहराइत है।।
पूर्ण देश रखना हो तो शहीद पूजिएगा,
देव तुल्य उपमा सहज ठहराइत है।
आन-मान-शान भी बचा रहे सुहागिनों का,
यही से अमर गान सबका सुनाइत है।।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।।

अर्थात-
हम सब एक साथ चलें; एक साथ बोलें; हमारे मन एक हों। प्राचीन समय में देवताओं का ऐसा आचरण रहा इसी कारण वे वंदनीय हैं।

एक कोर्स ऐसा भी कराया जाए

मनीष कुमार शर्मा
बी.ए. तृतीय वर्ष

एक कोर्स ऐसा भी कराया जाए,
जिसमें इंसान बनना सिखाया जाए।
अमीर हो या हो गरीब,
इंसान को इज्जत देना सिखाया जाए।।१।।

अपनी हो या किसी और की,
हर मां का सम्मान कराया जाए।
परिस्थितियां हों चाहे कुछ भी,
धैर्य रखना सिखाया जाए।।२।।

बुजुर्ग हो यदि कोई,
मदद देना सिखाया जाए।
बहन बेटी हो किसी की भी,
रक्षा करने का फर्ज बताया जाए।।३।।

धन सिर्फ संचय के लिए नहीं,
दान करना भी सिखाया जाए।
योग्यता घमंड करने के लिए नहीं,
योग्य बनाना भी सिखाया जाए।।४।।

प्रदूषण फैलाना है एक जुर्म,
पृथ्वी को बचाना भी सिखाया जाए।
सिर्फ माटी का ढांचा घर नहीं,
वसुधैव कुटुंबकम् बताया जाए।।५।।

अनिवार्य हो यह कोर्स,
हर डिग्री पूरी करने के बाद।
न ग्रेड मिले न अंक मिले,
मिले आशीष और धन्यवाद।।६।।

उसी से संपन्न हो डिग्री,
तभी होगी इंसानियत आबाद।
मनुष्य की संतति को मनुज बनाया जाए,
एक कोर्स ऐसा भी कराया जाए।।७।।

निर्बंध जिन्दगी

दिव्या
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

जिन्दगी जिन्दगी ए जिन्दगी
मुश्किल तो नहीं, सोचा था जितना
ये आसान भी नहीं जिन्दगी
इसका हर पल, हँसकर जियो
रोकर जिया, तो कैसी वो जिन्दगी?
जिन्दगी ये जंग से, कम तो नहीं
गम है कभी, तो कभी है खुशी
जिन्दगी का हर पल, खुल कर जियो
बंध से गए गर, तो कैसी वो जिन्दगी !!!!

व्यंग्य

मनीष कुमार शर्मा
बी.ए. तृतीय वर्ष

शादी की पच्चीसवीं सालगिरह पर
पत्नी पुलकित होकर पति से लिपटे हुए बोली –
'आप बिल्कुल नहीं बदले
वैसे के वैसे ही भोले-भाले, वैसे ही शांत, एकदम पहले जैसे।'
पति भावुक होकर बोला
'जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।'
पति सरस्वती शिशु मंदिर का छात्र था
और पत्नी इंग्लिश मीडियम कान्वेंट एजुकेटेड थी।
पत्नी खुश होकर चाय नाश्ता बनाने चली गई।

वसुधैव कुटुंबकम्

वेद प्रकाश
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

प्रस्तावना :

धरती पर हर एक जीव चाहे मनुष्य हो, प्राणी हो या जंतु, सभी जीवों के लिए परिवार उनकी प्राथमिकता होती है। सभी जीव अपने परिवार से प्यार करते हैं उनके सुख-दुख का साथी होते हैं। हालांकि ऐसा नहीं है कि परिवार में लड़ाई-झगड़े नहीं होते, वैचारिक मतभेद नहीं होते, लेकिन, यह मतभेद कुछ क्षणों के लिए होते हैं। भले ही कभी उनके बीच तनाव हो लेकिन वह कभी भी एक दूसरे को दुख पहुँचा कर विकास करने को नहीं सोचते।

वसुधैव कुटुंबकम का अर्थ :

वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा का संयुक्त अर्थ समझने से पहले इसके प्रत्येक शब्द का अर्थ समझते हैं '' वसुधैव'' का अर्थ होता है पृथ्वी ही और कुटुंब का अर्थ है परिवार। इस तरह वसुधैव कुटुंबकम् का संयुक्त अर्थ होता है ''पृथ्वी ही एक परिवार है।'' जिस तरह कोई भी इंसान अपने परिवार को नुकसान पहुंचाने के बारे में सोच नहीं सकता, वह अपने परिवार के प्रति दुश्मनी की भावना नहीं रखता। ठीक उसी तरह वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को अपना लेने से सभी मानव बैर भूलकर आपसी परिवार की तरह रहने लगता है।

'वसुधैव कुटुंबकम्' वाक्य इस विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है कि विश्व के सभी प्राणियों को एक-दूसरे के प्रति दया, करुणा का भाव रखना चाहिए। एक-दूसरे के प्रति सम्मान के साथ व्यवहार करना चाहिए। उन्हें शांति एवं सद्भाव के साथ रहने का प्रयास करना चाहिए।

वसुधैव कुटुंबकम् का महत्व :

वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा की संकल्पना भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों के द्वारा ही दी गई थी। इस संकल्पना का उद्देश्य धरती के सभी जीव के बीच शांति स्थापित करना था। मानव को एक-दूसरे का सहायक बनाना था, ताकि मानवता फैलती रहे।

भारत में वसुधैव कुटुंबकम् की भावना प्राचीन काल से ही सभी लोगों में ओत-प्रोत थी। इसीलिए तो भारत ने हर जाति और धर्म के लोगों को शरण दी। लेकिन भारत में 16वीं व 17वीं शताब्दी के बीच यूरोपीय देशों ने इसे अपना उपनिवेश बनाना शुरू किया और देश के लोगों के बीच में फूट डालने की कोशिश की, जिससे कि धीरे-धीरे वसुधैव कुटुंबकम् की भावना का ह्रास होने लगा।

यद्यपि प्राचीन काल से ही मनुष्य एक-दूसरे के प्रति घृणा की भावना रखते थे। लेकिन समय-समय पर समाज में ऐसे कई महान पुरुष हुए जिन्होंने लोगों को वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को अपनाने के लिए प्रेरित किया ताकि लोगों के बीच शांति और प्रेम स्थापित हो सके और मानवता का विकास हो सके।

वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा में न जाने कितने ही लोगों के बीच भेदभाव को खत्म कर उनके बीच शांति स्थापित की है। जब तक वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा लोगों में व्याप्त रहेगी धरती पर सुख-शांति बनी रहेगी।

वसुधैव कुटुंबकम् का सिद्धांत :

- वसुधैव कुटुंबकम् का सिद्धांत बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकता है। पूरे पृथ्वी को परिवार मानकर एक नई विश्व व्यवस्था का निर्माण करने के लिए वसुधैव कुटुंबकम् के

इन सात सिद्धांतों का पालन हर किसी को करना चाहिए।

- पृथ्वी के हर एक मनुष्य को समझने की जरूरत है कि हर जीव एक-दूसरे पर निर्भर है। सभी का अस्तित्व एक दूसरे के कारण ही संभव है। इसलिए एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना रखनी चाहिए।
- सहयोग और सम्मान वसुधैव कुटुंबकम् का दूसरा सिद्धांत है।
- वसुधैव कुटुंबकम् का तीसरा सिद्धांत स्वीकृति और सहिष्णुता है, जो मानव को एक-दूसरे को अपनाकर शांति स्थापित करना सिखाता है।
- वसुधैव कुटुंबकम् का चौथा सिद्धांत आपसी प्रेम है। एक दूसरे के प्रति प्यार और करुणा लोगों को एकजुट करता है, उसमें एकता स्थापित करता है।
- एक दूसरे की भावना की समझ वसुधैव कुटुंबकम् का पांचवा सिद्धांत है। समाज के हर एक धर्म और संप्रदाय के लोगों को अपनी समझ विकसित करने की जरूरत है ताकि वह दूसरे के प्रति सहानुभूति दिखाएं।
- अहिंसा वसुधैव कुटुंबकम् का छठा सिद्धांत है।
- दिशा-निर्देश प्रवचन वसुधैव कुटुंबकम् का सातवां सिद्धांत है। संवाद के माध्यम से मानव एक दूसरे के बीच सद्भावना हासिल कर सकता है।

वसुधैव कुटुंबकम् अवधारणा की आवश्यकता :

एक देश शक्तिशाली बनने के लिए दूसरे देश के साथ युद्ध करता है। दुनिया के कई देश आपस में लड़ते हैं, झगड़ते हैं, धरती के कुछ टुकड़ों के लिए मर मिटने को तैयार हो जाते हैं। लेकिन वह एक दूसरे के जीवन के महत्व को नहीं समझते।

आज भले ही पूरा विश्व अलग-अलग समूह में बँटा हुआ है, सैकड़ों देश है, लेकिन इस पूरे धरती पर रहने वाले सभी जीव तो एक समान हैं, इंसान भले ही अपने आपको रंग-धर्म के अनुसार बांट लिया हो लेकिन उनका निर्माण करने वाले केवल एक ही परमपिता परमेश्वर हैं।

आज सभी देश अपने अधिकारों एवं उद्देश्य के प्रति सजग हैं लेकिन उन सभी का उद्देश्य तो एक ही है। विकास करना। ऐसे में सभी को दुर्भाव भुलाकर वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को अपनाने की आवश्यकता है। क्योंकि सभी के साथ ही सबका विकास होता है।

यदि व्यक्ति दुश्मनी और बैर की भावना रखेगा, अपने धर्म, मजहब के नाम पर मारकाट करेगा तो एक समय ऐसा आएगा जब इस धरती पर इंसान ही नहीं बचेगा। ऐसे में जरूरी है कि हर एक व्यक्ति वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को अपनाकर शांतिपूर्वक अपना जीवन जीए।

निष्कर्ष :

'समूची पृथ्वी ही परिवार है'-यह अवधारणा हर एक व्यक्ति को आपसी बैर भुलाकर एक साथ शांति से रहना सिखाता है। इस अवधारणा का आभास हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों को पहले ही हो गया था। तभी तो कई ऋषि-मुनियों एवं कई महान महापुरुषों ने समय-समय पर समाज में व देश में धर्म, जाति, संप्रदाय के नाम पर लड़ने-झगड़ने वाले लोगों को समझाने का काम किया।

हम सब समस्या का सामना कर सकते हैं। कोविड-19 महामारी के समय जब पूरा विश्व तनावग्रस्त और अशांत, वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा को अपनाते हुए एक दूसरे का सहारा बना और इस महामारी पर विजय प्राप्त हो सकी। इसलिए यदि 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा रहेगी तभी विश्व का विकास होगा और विश्व के समस्त जीव शांति से रह पाएंगे।

समाज के निर्माण में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान

गार्गी मिश्रा
बी. ए. चतुर्थ सेमेस्टर

राष्ट्रीय सेवा योजना को सामाजिक निर्माण के प्राथमिक उद्देश्य से (एनएसएस) 1969 में शुरू किया गया था। शुरुआत में इसे कई विश्वविद्यालय में शुरू किया गया था जिसमें लगभग 30-40000 स्वयंसेवियों को शामिल किया गया था।

स्वयं के व्यक्तित्व को विकसित करने के अलावा (एनएसएस) स्वयंसेवियों ने समाज के प्रति महत्वपूर्ण योगदान दिया। पिछले वर्ष के दौरान (एनएसएस) इकाइयों ने देश भर में गांव-झोपड़िया में 12,628 विशेष शिविरों का आयोजन किया था। (एनएसएस) स्वयंसेवियों ने श्रमदान के रूप में 91 लाख घंटे स्वयं सेवा की और 1.98 लाख यूनिट रक्तदान किया तथा 13. 27 पौधों का रोपण किया।

विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यक्रमों तथा सामाजिक मुद्दों पर रैलियों के माध्यम से 30011 जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस योजना के माध्यम से स्वयंसेवी स्वच्छ भारत मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के गतिशील नेतृत्व में भारत सरकार ने सबका साथ सबका विकास के सिद्धांत के बाद एकजुट मजबूत और आधुनिक भारत बनाने के लिए एक भारत श्रेष्ठ भारत के मिशन पर कार्य शुरू किया है। भारत के वैश्विक निर्माण केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए मेक इन इंडिया अभियान शुरू किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना का सामाजिक निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। छात्रों के मन में समाज के प्रति जिम्मेदारी और भावनाओं को उत्पन्न करने के लिए ही इस योजना का शुभारंभ किया गया है। इससे जुड़े विद्यार्थी इस योजना के माध्यम से गांव-गांव और आसपास के नगरों में जहां सरकार द्वारा चलाई गई योजना जो उन सभी के लिए उपयोगी है, वहां पहुंचाई जाती है तथा उन योजनाओं का महत्व और कार्य पूर्ण रूप समझाई जाती है। इकाई हमारी बड़ी है जन-जन में पहुंचना जानकारी है। राष्ट्रीय सेवा योजना में होने वाली गतिविधियों में भाग लेने वाले स्वयंसेवी समाज के लोगों के साथ मिलकर समाज के हित के कार्य करते हैं। एन एस एस की वैचारिक थीम महात्मा गांधी के आदर्शों से प्रेरित है। एन एस एस का आदर्श वाक्य 'नॉट मी बट यू' है। एक एन एस एस स्वयंसेवी स्वयं से पहले समुदाय को स्थान देता है तथा उनके बारे में विचार करता है। यह शिक्षा के तीसरे आयाम का हिस्सा है अर्थात मूल्यवर्धन शिक्षा है जो कि तेजी से महत्वपूर्ण बनी जा रही है। कुछ करना है तो समाज के लिए करो, अपने लिए तो सब करते हैं। इससे जुड़े विद्यार्थी अपने आसपास के क्षेत्र में साफ-सफाई तथा समाज कल्याण के बारे में लोगों के जागरुक करते हैं। एनएसएस, जो समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं। इसके द्वारा लगाए गए शिविर के माध्यम से पौधारोपण तथा वनीकरण, सामुदायिक सर्वेक्षण कार्यक्रम, परिवार कल्याण, पोषण संबंधी कार्यक्रम, सामाजिक समस्याओं, शिक्षा और स्वच्छता जैसे मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करने वाले रोड शो या नुक्कड़ नाटक आयोजित करते हैं। समुदाय की

समस्याओं को जानना और उन्हें हल करने के लिए उनमें शामिल होना तथा साथ-साथ उन सभी व्यक्तियों के मन को सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारियों की भावना को उत्पन्न करना है। जैसे स्वयं का अन्य नागरिकों को सृजनातक और रचनात्मक कार्यों में परिवर्तित करना, प्रजातांत्रिक नेतृत्व को क्रियान्वित करने में दक्षता प्राप्त करना, लोगों के अंदर समाज के प्रति व्यावहारिक भावनाओं को उत्पन्न करना है, शिक्षित और अशिक्षितों के बीच की दूरी को मिटाना है, समुदाय के कमजोर वर्ग की सेवा करने के लिए स्वयं में इच्छाएं पैदा करनी है,समाज के लोगों को रोजगार के योग्य बनाने के लिए दक्षता प्राप्त करना आदि। (एनएसएस) का व्यापक उद्देश्य आपातकालीन एवं राष्ट्रीय आपदाओं से निपटने की क्षमता को विकसित करना है। राष्ट्रीय सेवा योजना के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व को निखारने एवं भविष्य में उन्हें संवेदनशील कर्तव्यनिष्ठ ग्रुप बनाने में मदद मिलती है।

खुश किस्मत थे की खुद को वॉलिंटियर कह पाए हम,
जिंदगी की असली हुनर को सीख पाए हम।
मैं न हूं कोई वैद, न किसी सरहद का सिपाही,
आई एम वॉलिंटियर आफ एन एस एस,
जिसने सेवा ही अपनाई ।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।।

अर्थ :

हे परमात्मन् ! आप हम दोनों गुरू और शिष्य की साथ- साथ रक्षा करें , हम दोनों का पालन-पोषण करें, हम दोनों साथ-साथ शक्ति प्राप्त करें,हमारी प्राप्त की हुई विद्या तेजप्रद हो, हम परस्पर द्वेष न करें, परस्पर स्नेह करें।

INDIAN NAMING SYSTEM
Some Random Observations

Dr. V.CH.N.K. Srinivasa Rao
Professor & Head, Dept. of English

Indian names are in general based on a variety of systems and naming conventions, which vary from region to region. Names are also influenced by religion and caste and may come from epics. Indians speak a wide variety of languages and nearly every major religion in the world has a following in India. This variety makes for subtle, often confusing, differences in names and naming styles. Due to historical Indian cultural influences, several names across South and Southeast Asia are influenced by or adapted from Indian names or words.

It is said that village names were used only after the arrival of the Portuguese, when the people migrated from their ancestral villages. A suffix kar or hailing from was attached to the village name. I personally believe it a bit doubtful.

Place names or names derived from places of ancestral origin (Aluru, Marwari, Gavaskar, Gaonkar, Mangeshkar, Kapoor, Wamankar, Kokradi, Karnad, Sandhu, Medukonduru, Rachapalli).

In Andhra Pradesh and Telangana, surnames usually denote family names. It is easy to track family history and the caste they belonged to using a surname.

Patronymics and ancestry, whereby the father's name or an ancestor's given name is used in its original form or in derived form (e.g. Baranwal or Barnwal or Burnwal derived from the ancestor Ahibaran).

Caste or clan names (Pillai, Gounder, Goud, Gowda, Boyar, Parmar, Sindhi, Vaish, Reddy, Meena , Nair, Nadar and Naidu) are not surnames but suffixes to first names to indicate their clan or caste.

The father's first name is used as a surname in certain Southern states, such as Kerala, Karnataka and Tamil Nadu. Spouses and children take on the first name of the father as their last name or 'surname'.

North Karnataka surnames are drawn from the name of the place, food items, dresses, temples, type of people, platforities and profession and so on.

In coastal Karnataka, the surnames are different in different regions. Surnames like Hegde and Hebbar belong to the Brahmin community, while other titles like Ballal, Shetty, and Rai are mostly used by the landed Bunt community.

The system of keeping the First name, Father's first name, Surname is found in Karnataka also.

Names in South Karnataka follow village name, father's name, personal name. For example, take H. D. Kumaraswamy. H refers to Haradanahalli (his native) D refers to Devegowda (his father's name) and his first name is Kumaraswamy.

Malayalis follow similar customs to Tamils and people in South Karnataka of village name, father's name, personal name. Marathi people of Hindu religion follow a partially Patronymic naming system. For example, it is customary to associate the father's name with the given name. In the case of married women, the husband's name is associated with the given name. Therefore, the constituents of a Marathi name as given name /first name, father/husband, family name /surname. For example:

Mahadev Govind Ranade: Here Mahadev

is the given name, Govind is his father's given name and Ranade is the surname.

Jyotsna Mukund Khandekar: Here Jyotsna is the given name, Mukund is the husband's given name, and Khandekar is the surname of the husband

A large number of Maharashtrian surnames are derived by adding the suffix kar to the village from which the family originally hailed. For example, Junnarkar came from town of Junnar, Waghulkar comes from the town of Waghul.

Tamil names usually follow this pattern: Initial (Village name), Initial (Father's name), First Name, Caste name (Example: E.V. Ramasamy, where E stands for Erode, and V stands for Venkatappa, the father's name. Another example is R. Karthik, where R stands for Ravichandran, the father's name).

There is a widespread usage of a patronym (use of the father's first name as the second name). This means that the first name of one generation becomes the second name of the next. In many cases, the father's name appear as an initial and thus the first name may be presented as a second name. When written in full (for example, on a passport), the initial is expanded as last name. For example, a name like "R. Ramesh" or "Ramesh R.", will be written in full as "Ramesh Ramaiah", and refers to "Ramesh son of Ramaiah". If Ramesh then has a son named Vijay, then his name would be 'R. Vijay' or 'Vijay Ramesh' as it would be in the West.

In earlier times a caste name or village name was used by the Tamils as their last name, but due to the influence of the Dravidian movement, Tamils of all castes have mostly given up caste surnames. However, frequently adopt their father's or husband's name and take it for successive generations.

The various Tamil caste names include Paraiyar, Vishwakarma, Aachari, Konar, Idaiyar, Reddiar, Udayar, Yadhavar, Iyengar, Iyer, Pillai, Mudaliar, Thevar, Nadar, Chettiar, Gounder, Naicker etc. The naming is therefore done in the fashion: Sunitha Ram Kumar Pillai.

Occasionally, caste name is also suffixed at the end. For example, Neelam Sanjiva Reddy, where Neelam is the family name, Sanjiva is the given name and Reddy is the caste name. Telugu people have a different naming style from rest of India.

Telugu people are often named after Hindu gods or goddesses.

Nearly all Telugus possess family name called 'Inti peru' (lit. 'House name'), which are the most unique of all the linguistic groups in India.

The family name is a genitive case, hence stands first, which followed by personal name.

This practice of placing family name first is also seen in Chinese and Hungarians.

Thus 'Family name (surname), Given name' format is contrasted from North India where family name typically appears last or other parts of South India where family names are little used.

This might cause confusion to varying degree within India and rest of the world. Telugu family names are often abbreviated and written, e.g., P. V. Narasimha Rao, D. Ramanaidu, etc. unlike the western names where given name is abbreviated.

Unlike western names, where family name is well known over personal name, it is contrary among the Telugus, where person is well known by given name, without ever hearing their family name. Telugu family names are often named after a place. For example, Pasupaleti after Pasupaleru, Kondaveeti after Kondaveedu, Kandukuri is named after Kandukur etc.

The Power of Inspiration and Motivation :

How Graduation Students Can Overcome Challenges

Shishir Tripathi
H.O.D. of Zoology

As a teacher and mentor, I understand the immense amount of pressure and stress that comes with completing a degree. It can be overwhelming at times, but I found that inspiration and motivation played a huge role in helping me overcome the challenges that came my way. In this article, I will share with you the importance of inspiration and motivation for graduation students, practical tips for staying motivated during graduation, inspirational stories of successful graduates, and the role of mentors in inspiring and motivating graduation students. I will also touch on the power of positive affirmations and visualization, resources for finding inspiration and motivation, and the importance of taking action and staying accountable.

Introduction to the Power of Inspiration and Motivation

Inspiration and motivation are two powerful tools that can help you achieve your goals and overcome obstacles. Inspiration is the spark that ignites your passion and creativity, while motivation is the driving force that keeps you moving forward towards your goals. As a graduation student, you will face many challenges, both academically and personally. These challenges can be daunting, but with the right mindset and tools, you can overcome them.

The Importance of Inspiration and Motivation for Graduation Students

As a graduation student, you will likely experience moments of self-doubt, anxiety, and stress. Inspiration and motivation can help you combat these negative emotions and stay focused on your goals. When you are inspired, you are more likely to come up with creative solutions to problems and find new ways to approach challenges. Motivation, on the other hand, helps you stay committed to your goals and keep pushing forward, even when things get tough.

Overcoming Challenges Through Inspiration and Motivation

One of the biggest challenges that graduation students face is the pressure to perform well academically. This pressure can lead to stress, anxiety, and even depression. However, by staying inspired and motivated, you can overcome these challenges and achieve academic success. One way to stay inspired is to surround yourself with positive influences, such as supportive friends and mentors. You can also seek out inspirational stories of successful graduates and use them as motivation to keep pushing forward.

Practical Tips for Staying Motivated During Graduation

Staying motivated during graduation can be a challenge, especially when you are facing multiple deadlines and competing priorities. However, there are several practical tips that you can use to stay motivated and focused. One tip is to break down your goals into smaller, more manageable tasks. This can help you stay motivated by giving you a sense of accomplishment as you complete each task.

Another tip is to set deadlines for yourself and hold yourself accountable. This can help you stay on track and avoid procrastination.

Inspirational Stories of Successful Graduates

Hearing the stories of successful graduates can be incredibly inspiring and motivating. Many successful graduates faced challenges and setbacks along the way, but they persevered and achieved their goals. One such story is that of Oprah Winfrey, who overcame poverty and abuse to become one of the most successful television hosts in history. Another inspiring story is that of J.K. Rowling, who was rejected by multiple publishers before finally finding success with the Harry Potter series.

The Role of Mentors in Inspiring and Motivating Graduation Students

Having a mentor can be incredibly beneficial for graduation students. A mentor can provide guidance, support, and inspiration as you navigate the challenges of graduation. They can also provide a fresh perspective and help you see things in a new light. If you don't have a mentor, consider reaching out to a professor, alumni, or career counsellor.

The Power of Positive Affirmations and Visualization

Positive affirmations and visualization are two powerful tools that can help you stay inspired and motivated. Positive affirmations are statements that you repeat to yourself to help you stay positive and focused. Visualization involves imagining yourself achieving your goals and experiencing the emotions associated with that achievement. By practising these techniques regularly, you can stay focused on your goals and overcome obstacles.

Resources for Finding Inspiration and Motivation

There are many resources available to graduation students who are seeking inspiration and motivation. One resource is motivational books, such as 'The Seven Habits of Highly Effective People' by Stephen Covey or 'The Power of Positive Thinking' by Norman Vincent Peale. Another resource is motivational speakers, such as Tony Robbins or Eric Thomas. You can also find inspiration and motivation through podcasts, blogs, and social media.

Taking Action and Staying Accountable

Finally, it's important to take action and stay accountable if you want to achieve your goals. This means setting deadlines, breaking down your goals into smaller tasks, and holding yourself accountable for your progress. You can also enlist the help of a friend or mentor to keep you accountable.

Conclusion and Final Thoughts on the Power of Inspiration and Motivation for Graduation Students

In conclusion, inspiration and motivation are two powerful tools that can help you overcome the challenges of graduation and achieve your goals. By staying inspired and motivated, breaking down your goals into smaller tasks, and holding yourself accountable, you can achieve academic success and personal fulfilment. Remember to surround yourself with positive influences, seek out inspirational stories, and practice positive affirmations and visualization regularly. With the right mindset and tools, you can overcome any obstacle and achieve your dreams.

English as a Global Language

Dr. Vandana Bhartiya
Assistant Professor, English dept.

English as a global language refers to the widespread use and acceptance of English as a common means of communication across different nations and cultures. This phenomenon has been fuelled primarily by historical and geopolitical factors, as well as the influence of the British Empire and later, the United States as a global superpower. With nearly 1.5 billion speakers across the globe, English has undoubtedly become the undisputed lingua franca of the modern world. This article aims to explore the remarkable rise of English as a global language and discuss its impact on the interconnectedness of nation. There are several factors that have contributed to its position as a global language.

One major factor is the historical influence of the British Empire. As the empire expanded and colonized various parts of the world, the English language was adopted by the local populations. The expansion of the British Empire during the 19th and 20th centuries led to the spread of English to various countries, including India, Australia, Canada, and many African nations. This colonial legacy, coupled with the economic and political power of English-speaking countries such as the United States, has contributed to widespread adoption of English as a lingua franca. Additionally, the industrial revolution and the scientific advancements made by English speaking nations further cemented the importance of English in academia and commerce. Consequently, English became the language of trade, industry, and diplomacy. The political influence of the United States in the 20th century played a significant role in elevating English to its global status. The United States emerged as an economic and military power, leading to the widespread dissemination of American culture and values.

Moreover, the rise of the internet and advancements in technology have further accelerated the global influence of English. The internet has created a virtual global community, where English is the primary language of communication. English dominates various domains, such as business, science, academia, and popular culture, making it essential for individuals seeking to participate in these global interactions. Its versatility and adaptability have made it the language of choice for international trade, diplomacy, and tourism.

The spread of English as a global language has implications for education systems around the world. English has become a prerequisite for higher education and employment opportunities in many countries, leading to a renewed emphasis on English language proficiency. This emphasis on English can be seen as an advantage, as it equips individuals with the necessary skills to navigate the globalizing world. Furthermore, English has become the language of education and research. Many prestigious universities around the world have adopted English as the medium of instruction, attracting students from various

linguistic backgrounds. They offer courses and programs in English, making it necessary for students to possess a good command of the language. Additionally, the vast majority of scientific publications and research papers are written in English. This has created an incentive for individual to learn English in order to access academic knowledge and opportunities abroad.

English has become the language of international business, diplomacy, and academia. Its usage in these domains allows for increased efficiency and effectiveness in global communication, as individual from different linguistic backgrounds can rely on a common language for interaction. One of the main benefits of English as a global language is its ability to facilitate international trade and economic growth.

English has also had a significant influence on technology, science, and the dissemination of knowledge. Most of scientific research, technical publications, and academic conferences are conducted in English. The dominance of English in these fields ensures that important advancements and discoveries can be shared globally and accessed by a wider audience. Multinational companies often require their employees to be fluent in English to participate in international projects or to work in overseas branches.

The global dominance of English has resulted in numerous benefits and challenges. One the one hand, it facilitates communication and understanding among people from diverse linguistic backgrounds. English allows individuals to overcome language barriers, fostering global cooperation, trade, and culture exchange. It enables international business transactions, aids in tourism, and promotes a shared understanding of global issues. For example, non-native English speakers often use English as a common language while communicating with individuals from different countries who also have a different native tongue.

On the other hand, the spread of English has led to concerns regarding linguistic diversity and cultural homogeneity. Critics argue that the dominance of English may lead to the marginalization and loss of indigenous language and cultures. Moreover, it puts non-native English speakers at a disadvantage in certain fields, especially when it comes to job opportunities and access to information. Consequently, efforts to preserve and promote linguistic diversity have gained momentum, as there is a heightened awareness of the importance of preserving indigenous language in the face of globalization.

In conclusion, English has undoubtedly emerged as a dominant global language due to historical, cultural, and technological reasons. While its global prevalence facilitates communication and cooperation, it also poses challenges regarding cultural diversity and access to opportunities. It is crucial to strike a balance between the benefits of a global language and the preservation of linguistic and cultural heritage. Ultimately, English as a global language should be embraced as a tool for inclusion and understating rather than a means of exclusion and cultural hegemony.

मानव सेवा ही सच्चा धर्म
भारतीय रेड क्रास सोसायटी

श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज इकाई, गोण्डा
प्रतिवेदन: वर्ष 2022-23

डॉ0 राजीव कुमार अग्रवाल
प्रभारी, रेड क्रास इकाई

रेड क्रास इकाई में शैक्षणिक सत्र 2022-23 में 109 छात्रें एवं छात्रों ने सेवा के इस कार्य हेतु पंजीयन कराया। रेड क्रास के स्वयंसेवक सभी राष्ट्रीय पर्वों पर उपस्थित रहे। सत्र के मध्य में कई लोगों को प्राथमिक चिकित्सा प्रदान की गयी। 6 दिसम्बर 2022 को ललिता शास्त्री सभागार में स्वयंसेवकों को रेड क्रास के वैश्विक परिदृश्य से परिचित कराया गया तथा दुर्घटना की स्थिति में मरीज का निरीक्षण कैसे करेंगे? विषय पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। सत्र के मध्य में स्वयंसेवकों की कई मीटिंग आयोजित की गयीं। 4 व 10 मार्च 2023 को ललिता शास्त्री सभागार में स्वयंसेवकों को पट्टियाँ बांधने का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। 13 मार्च 2023 को सी0पी0आर0 का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण में पूर्व स्वयंसेवक संदीप कुमार मिश्र का सराहनीय योगदान रहा।

उत्तर प्रदेश में संचारी रोग नियंत्रण अभियान जो कि जापानी इंसेफेलाइटिस, एक्यूट इंसेफेलाइटिस सिंड्रोम, फाइलरिया, चिकनगुनिया, डायरिया व मलेरिया आदि रोगों से बचाव के लिए चलाया जा रहा है इसके संदर्भ में जागरूकता फैलाने के लिए जनपदीय रेड क्रास सोसायटी के सहयोग से 18 अक्टूबर 2022 को कॉलेज में एक वार्ता आयोजित की गई। इस अवसर पर डॉ0 ए0पी0 सिंह मौली-सचिव, जनपदीय रेड क्रास इकाई व ए0सी0एम0ओ0 गोण्डा, डॉ0 ज्योत्सना शुक्ला-गाइनोकोलोजिस्ट, हाकिम अली, वर्षा सिंह-उपाध्यक्ष, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, प्रोफेसर रवीन्द्र कुमार, प्राचार्य, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज आदि उपस्थित थे।

मुख्य वक्ता डॉ0 ए0पी0 सिंह मौली ने बताया कि राज्य में इंसेफेलाइटिस से होने वाली मौतों पर 95 प्रतिशत तक नियंत्रण हो गया है और शेष 5 प्रतिशत को नियंत्रित कर इस बीमारी को पूरी तरह से समाप्त कर दिया जायेगा। उन्होंने यह भी बताया कि स्वास्थ्य विभाग के कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों को जागरूक करेंगे और यदि कोई बीमार पाया जाता है तो वे इलाज की व्यवस्था करेंगे और एक मेडिकल किट उपलब्ध करायेंगे।

संचारी रोगों से बचने के लिए उन्होंने सलाह दी कि सभी लोग दिन में फुल आस्तीन के कपड़े पहने और अपने घरों के आसपास जलभराव न होने दें। घरों की छतों के ऊपर टूटे-फूटे बर्तन, टायर, कबाड़ आदि चेक करते रहें, कहीं भी पानी जमा न होने दें। कूलर और फ्रिज का पानी बदलते रहें। बड़े बुजुर्गों व बच्चों को मच्छरदानी के अंदर लिटाएं और बुखार आने पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र या सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र या जिला अस्पताल पर जांच व इलाज कराएँ। डॉ0 ज्योत्सना शुक्ला ने महिला स्वयंसेवकों को माँ बनने में होने वाली सावधानियों से अवगत कराया। उपाध्यक्ष, प्रबन्ध समिति, वर्षा सिंह जी ने विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे पढ़ने के साथ-साथ कॉलेज में होने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भागीदारी करें ताकि उनका समावेशी विकास हो सके। इस क्रम में एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

1 दिसम्बर 2022 को विश्व एड्स दिवस मनाया

गया। इस अवसर पर वर्षा सिंह जी, उपाध्यक्ष, कॉलेज प्रबन्ध समिति एवं डॉ0 ए0पी0 सिंह सचिव, रेड क्रास सोसायटी, गोण्डा अपनी टीम के साथ उपस्थित थे। रेड क्रास, राष्ट्रीय सेवा योजना, एन0सी0सी0 के स्वयंसेवकों सहित कॉलेज के विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया। उपस्थित लोगों को एड्स से बचाव व इलाज की समुचित जानकारी प्रदान की गयी तथा उन्हें शपथ भी दिलाई गयी।

दिनांक 19 से 21 मार्च 2023 के मध्य प्राथमिक चिकित्सा का वार्षिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें 88 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण के लिए नामांकन कराया था परन्तु 63 स्वयंसेवक ही प्रशिक्षण पूर्ण कर सके। इसमें सीनियर इन फर्स्ट एड में 43, वाउचर इन फर्स्ट एड में 18 तथा मेडेलियन इन फर्स्ट एड में 2 स्वयंसेवक अपना प्रशिक्षण पूर्ण कर सके। प्रशिक्षण डॉ0 राजीव कुमार अग्रवाल के निर्देशन में सेण्ट जॉन एम्बूलेन्स बिग्रेड के कोर आफिसर आशीष शर्मा द्वारा दिया गया। शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि वर्षा सिंह, उपाध्यक्ष प्रबन्ध समिति, श्री उमेश शाह सचिव प्रबन्ध समिति एवं प्रो॰ दीनानाथ तिवारी, प्राचार्य श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज गोण्डा द्वारा किया गया।

वर्षा सिंह जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि रेड क्रास को प्राथमिक चिकित्सा पर बल देना चाहिए जिससे होने वाली सड़क दुर्घटनाओं और अन्य प्रकार की दुर्घटनाओं से प्राथमिक उपचार करके पीड़ितों की जान बचायी जा सके। उमेश शाह ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्राथमिक चिकित्सा को सभी के लिए अनिवार्य कर देना चाहिए जिससे कि विषम परिस्थितियों में व्यक्तियों की जान बचायी जा सके। प्राचार्य प्रो॰ दीना नाथ तिवारी ने अपना आशीर्वाद रेड क्रास के स्वयंसेवकों को प्रदान किया। धन्यवाद ज्ञापन सरोजिनी कुमारी ने किया। संचालन रेड क्रास इकाई के प्रभारी डॉ॰ राजीव कुमार अग्रवाल ने किया।

ट्रेनर आशीष शर्मा ने प्राथमिक चिकित्सा क्यों आवश्यक है? इस पर प्रकाश डालते हुए कहा कि समाज में सभी व्यक्तिफ़यों को प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए ताकि आकस्मिकताओं का सामना किया जा सके। उन्होंने गोल्डेन ऑवर की चर्चा करते हुये बताया कि दुर्घटना की स्थिति में पहले घण्टे का विशेष महत्व है। यदि दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को उचित प्राथमिक उपचार मिल जाए और उसे समय पर अस्पताल पहुँचा दिया जाए तो उसके जीवन की रक्षा हो सकती है। इस प्रशिक्षण में सामान्य जीवन रक्षक तकनीकी, प्राथमिक उद्देश्य, प्राथमिक चिकित्सक व उनके गुण, प्राथमिक चिकित्सा व उसके सुनहरे नियम, कृत्रिम-श्वसन के विभिन्न तरीके, मरीजों का परिवहन, सी0पी0आर0 करने का तरीका तथा आपातकालीन घटना से निपटने के उपायों के बारे में बताया गया।

इस अवसर पर प्रो0 अभय श्रीवास्तव, प्रो0 वी0सी-एच0एन0के0 श्रीनिवासा राव, पूर्व स्वयंसेवक संदीप मिश्र और अभिजीत यश भारती उपस्थित थे। शिविर के दूसरे दिन शरीर संरचना तथा रक्त संचरण के विषय में समझाया गया। इसके पश्चात कृत्रिम श्वसन, मरीज का परिवहन तथा घाव का प्राथमिक उपचार जैसे विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया । मरीज के परिवहन का प्रशिक्षण देते हुये प्रशिक्षक आशीर्ष शर्मा ने इसकी अनेक विधियों यथा अकेले होने पर मरीज को पीठ पर लाद कर ले जाना, गोद में ले जाना या स्वयं को बैसाखी की तरह बनाकर मरीज को ले जाना, दो सहायक होने पर हाथों को सीट बनाकर, एक व्यक्ति आगे और दूसरा व्यक्ति पीछे रहकर या कुर्सी का प्रयोग करके, अधिक सहायक होने पर हाथों की खाट बनाकर या स्कार्फ की सहायता से या शर्ट का स्ट्रेचर बनाकर मरीज के परिवहन का प्रदर्शन किया। जलने के विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन करते हुए उस स्थिति में प्राथमिक उपचार देने के बारे में बताया।

कृत्रिम-श्वसन का प्रशिक्षण भी दिया गया। इसमें किसी व्यक्ति की धड़कन या सांस रुक जाने पर सी0पी0आर0 विधि द्वारा बेहोश व्यक्ति को सांसे दी जाती

हैं, जिससे फेफड़ों को ऑक्सीजन मिलती है और साँस वापस आने तक या दिल की धड़कन सामान्य होने तक छाती को विशेष प्रकार से दबाया जाता है जिससे शरीर में पहले से मौजूद ऑक्सीजन वाला रक्त संचारित होता रहता है। लेकिन इसका प्रयोग केवल प्राथमिक चिकित्सा में प्रशिक्षित व्यक्ति ही कर सकता है। मनोसामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक प्राथमिक चिकित्सा के बारे में भी बताया गया।

शिविर के अंतिम दिन पट्टियों के प्रकार और उसे विभिन्न चोट की स्थितियों में बाँधने का तरीका समझाया गया। इसके पश्चात मरीज का परिवहन तथा घाव का प्राथमिक उपचार जैसे विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। मरीज के परिवहन करने के तरीके, जहर खा लेने, जलने के प्रकार और उसके उपचार तथा जानवरों के काटने पर प्राथमिक उपचार करने के बारे में बताया गया। कृत्रिम श्वसन का प्रशिक्षण भी दिया गया। इसमें किसी व्यक्ति की धड़कन या सांस रूक जाने पर सी0पी0आर0 विधि द्वारा बेहोश व्यक्ति को पुनः होश में लाया जाता है।

शिविर के समापन में मुख्य अतिथि डॉ0 एस0एन0 ओझा, वर्षा सिंह, उपाध्यक्ष, प्रबंध समिति, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज गोण्डा एवं पूर्व प्राचार्य प्रो0 वन्दना सारस्वत, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज गोण्डा की उपस्थिति ही स्वयंसेवकों ने विगत तीन दिनों में जो कुछ भी सीखा उसका संक्षिप्त प्रदर्शन अतिथियों के समक्ष प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि जो कुछ भी आपने सीखा है वह समाज और स्वयं के हित में प्रयोग करें। उन्होंने सीखे गये ज्ञान को समाज में भी सभी को सीखाने की सलाह दी। वर्षा सिंह जी ने अपने संबोधन में स्वयंसेवकों को बताया कि इस तीन दिवसीय शिविर में जो कुछ भी सीखा वह उसके एवं स्वयं के जीवन में अवश्य ही लाभकारी होगा। प्रो0 वन्दना सारस्वत ने स्वयंसेवकों को अपना आशीर्वाद देते हुए बताया कि स्वयंसेवकों को हमेशा मानव सेवा के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार रहना चाहिए। मुख्य अतिथि ने सभी को मानव सेवा करने के लिए प्रेरित किया और मानव सेवा करने की शपथ दिलायी।

एच0आई0वी0 कारण और बचाव विषय पर निबंध का आयोजन किया गया जिसमें हिमांशी सिंह को प्रथम, शलिनी मौर्य को द्वितीय और हिमांशु कनौजिया को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। शिविर में सक्रिय स्वंयसेवकों सरोजनी कुमारी, हिमांशी सिंह, ज्योति गौतम, रिंकी, रागिनी मौर्य, शालिनी मौर्य, प्रियांशी गुप्ता, सीमा वर्मा, रोली मिश्रा, कुमार सत्यम, एवं सरस्वती, पूर्व स्वंयसेवकों संदीप कुमार मिश्र एवं अभिजीत यश भारती को उनके अच्छे कार्य के लिए प्रमाण पत्र दिया गया। वर्ष भर उत्कृष्ट कार्य करने के लिए सर्वश्रेष्ठ महिला स्वयंसेवक का पुरस्कार पूनम को तथा सर्वश्रेष्ठ पुरुष स्वयंसेवक का पुरस्कार सौरभ कुरील को दिया गया। कार्यक्रम का फीडबैक सरोजनी कुमारी, शुभी, पूनम, गौरव सिंह और कुमार सत्यम ने दिया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रो0 वी0सी-एच0 एन0के0 श्रीनिवास राव, प्रो0 आर0बी0एस0 बघेल, डॉ0 वन्दना भारतीय, श्री विवेक प्रताप सिंह, श्री मनीष मोदनवाल और पूर्व स्वयंसेवक संदीप कुमार मिश्र, पूनम और अभिजीत यश भारती उपस्थित थे।

हमारी गतिविधियों को प्रबुद्ध पाठकों तक पहुँचाने के लिए हमारी इकाई मीडिया का आभार व्यक्ति करती है। हमारी इकाई महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति तथा प्राचार्य की आभारी है जिनका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग निरंतर प्राप्त हुआ, जिससे इस वर्ष हुए कार्यक्रम सफल हो सके। हमें आशा है कि भविष्य में सेवा के क्षेत्र में हम और अच्छा कार्य कर सकेंगे। अन्त में हम परमपिता परमात्मा के प्रति नतमस्तक हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं कि हमें सदैव ऐसी शक्ति प्रदान करें कि हम मानवता की सेवा कर सकें।

जय हिन्द! जय भारत! जय रेड क्रास!

मानव सेवा भगवान की सच्ची सेवा है

योग शिविर : एक विहंगम दृष्टि
योगः कर्मसु कौशलम्

प्रो० आर०बी० सिंह बघेल
संयोजक, योग शिविर

योगसूत्र, महाभाष्य् एवं चरक वार्तिकों के प्रणेता महर्षि पतजंलि (गोनर्दिय) की जन्मस्थली देवीपाटन परिक्षेत्र के मुख्यालय पर स्थित श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज के मुख्य परिसर में महाविद्यालय प्रबन्धन एवं प्रशासन के दिशा-निर्देश पर गत वर्षो की भाँति अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को ध्यानगत रखते हुए योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 16-22 जून 2023 तक विधिपूर्वक किया गया जिसमें महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं, प्राध्यापकों, कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में प्रतिभाग किया। योग्य प्रशिक्षकों के साथ प्रशिक्षण प्राप्त करके अभ्यास किया गया । ध्यान रहे कि अनियमित दिनचर्या, अनुपयुक्त आहार, अजीबोगरीब जीवन शैली, अनिद्रा, पर्यावरण प्रदूषण और शारीरिक शिथिलता के कारण लोग आज शारीरिक और मानसिक अवसाद से ग्रस्त होकर अप्रत्याशित रूप से असमय अस्वस्थ हो रहे हैं। उक्त मनोविकारों से बचाव हेतु नियमित रूप से चिकित्सकों के पास जाना स्थायी समाधान नहीं है। परन्तु योग तन, मन के साथ सामंजस्य बनाकर प्रतिदिन 45 मिनट के अभ्यास से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की नींव तैयार करके, जीवन शैली से जुड़ी बीमारियों से दूर रख सकता है। एम्स, दिल्ली की सामयिक रिपोर्ट के अनुसार 'रक्तचाप में सुधार के लिए प्रतिदिन 5 मिनट का भ्रामरी प्राणायाम लाभकारी होता है'।

आज वैश्विक परिदृश्य में योग और ध्यान की परिचर्चा हो रही है: योग और ध्यान साधना के सम्यक अभ्यास से निःसंदेह मानव जीवन के परम लक्ष्य सुख, शांति, और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। श्वास के आवागमन और क्षणिक ठहराव के प्रति सतत जागरूकता ही प्राणायाम का मूल है! यह सजगता और नियमित अभ्यास धीरे-धीरे प्राण और मन को नियंत्रित करने का कार्य करती है: योग ध्यान एवं प्राणायाम के सम्यक अभ्यास एवं अनुपालन से चित्तवृत्तियों का निरोध, विविध प्रकार के दुश्चिंताओं, व्याधियों, अवसाद और नैराश्य से मुक्ति, विपत्तियों का दृढ़ता के साथ मुकाबला करने का साहस और शक्ति की प्राप्ति, स्वास्थ्य, सुख और आनन्द के सुखद अनुभव से आत्मबल में निरन्तर अभिवृद्धि का अहसास, सकारात्मक विचारों में दृढ़ता, संस्वर व शरीर के वास्तविक स्वास्थ्य का प्रकटन होता है: योग अब शारीरिक व्यायाम नहीं अपितु एक सम्पूर्ण चिकित्सा प्रणाली एवं जीवन दर्शन है। ''योगश्चितवृत्तिनिरोधः'' मन से पार चेतना के क्षेत्र में प्रवेश का असीम आनन्द व अप्रतिम अलौकिक सुख और अनिर्वचनीय शांति प्राप्ति की चिरकालिक ऋषि परम्परा योग का है।

यह अदभुत, अकल्पनीय एवं अप्रतिम है कि 27 सितम्बर 2014 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने न्यूयार्क स्थित संयुक्त राष्ट्र संघ के महासम्मेलन में विश्व कल्याण के लिए योग की मान्यता हेतु प्रस्ताव रखा जो बहुमत 177/193 से पारित हुआ, फलस्वरूप संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव 'वान-की-मून' ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित कर दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नौवें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय में संयुक्त राष्ट्र के शीर्ष अधिकारियों, राजनयिकों और 290 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों के साथ ऐतिहासिक योग सत्र का नेतृत्व किया। योग दिवस के अवसर पर विडियो सन्देश में मोदी ने कहा कि ''भारत ने हमेशा जोड़ने, अपनाने और अंगीकार करने वाली परम्पराओं और संस्कृति को घोषित किया है''।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर योग के प्रति संचेतना ने भारत की आध्यात्मिक शक्ति, परम्परा और संस्कृति को समझने

का विश्व को अवसर प्रदान किया है। सांस्कृतिक शक्ति के रूप में योग भारत के प्रति विश्व में सकारात्मक वातावरण निर्मित करने के साथ उसके बारे में जानने का अधिकाधिक अवसर और प्रतिष्ठित करने का काम कर रही है। क्योंकि आज भी योग मन-मस्तिष्क को स्वस्थ रखने का सर्वोत्तम उपाय है।

केन्द्र व राज्य घोषित शिक्षण संस्थानों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में जहां समयबद्ध सूचनानुसार, शिक्षा, प्रशिक्षण और परीक्षा की विविध व्यवस्थाएं की जाती हैं। नवयुवक/नवयुवतियों के शारीरिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास हेतु नीति-पूरक प्रक्रियाओं के अन्तर्गत पाठ्य सहगामी विषयों में योग, ध्यान और प्राणायाम को प्राथमिकता से लागू किए जाने का प्रावधान है। उ०प्र० के यशस्वी मुख्यमंत्री 'योगी आदित्यनाथ' ने भारतीय ऋषि परम्परा से प्राप्त योग को मानवता के कल्याण के लिए उपहार बताते हुए लोगों से शरीर और मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के लिए योग को रोजमर्रा की जिन्दगी में दिनचर्या का हिस्सा बनाने की अपील की है।

'योगश्चितवृत्तिनिरोधः' योग से चित्तवृत्तियों का निरोध होता है। 'तदा द्रष्टुः स्वरूपेवस्थानम्' यही जीवात्मा सर्वद्रष्टः ईश्वर के स्वरूप में प्रतिष्ठित होकर 'आनन्द लाभ करता है। समाधि पाद सूत्र-3

(यम, नियम, आसन प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान और समाधि ये आठ साधनाएँ योगांग कहलाती हैं, जिनके सम्यक अनुपालन से साधक को अंततः मोक्ष की प्राप्ति होती है। साधन पाद सूत्र-29, योग सिद्धि में 'गुरुरेवकेवलम्' अर्थात गुरु का निर्देश उसकी कृपा का अत्यन्त महत्व है। यह हमारे लिए अत्यन्त सम्मान और गौरव का विषय है कि महर्षि पंतजलि गोण्डा जनपद के गोनर्द प्रदेश के हृदयस्थल कोडर (मनोहारी एवं विशाल झील के तटवर्ती भू-भाग में स्थित ग्राम में जन्म लेकर हमें गौरवान्वित किया। उनका 'पातंजल दर्शन' ग्रन्थ भारतीय वाड्मय की अमूल्य निधि है।

असंख्य व्यक्तियों के जीवन शैली में परिवर्तन और शरीर में ही औषधीय शक्ति जागृत करने और निरोग बनाने के उद्देश्य से नवयुवक/नवयुवतियों को योग, ध्यान एवं प्राणायाम के प्रति जागरूक करने के निमित्त महाविद्यालय में सात दिवसीय योग शिविर (16-22 जून 2023 तक) का आयोजन प्राचार्य प्रोफेसर रवीन्द्र पाण्डेय के सकुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ। शिविर का संयोजन प्रो० आर०बी० सिंह बघेल और टेक सत्यम एजूकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी बहराइच के संस्थाध्यक्ष डॉ- सत्यम सिंह द्वारा किया गया। दिनांक 16 जून, प्रातः 6 बजे से 8 बजे तक नियमित रूप से छात्र/छात्राओं को 'स्वस्थ जीवन शैली' विषय पर प्रकाश डालते हुए योगाचार्य, सुशील कुमार ने विद्यार्थियों को योग के अलग-अलग आसन, प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास कराया, योग के विभिन्न अभ्यास से होने वाले विभिन्न फायदों के बारे में जानकारी देकर उन्हें अपनी दिनचर्या में योग अभ्यास को अपनाने, स्वस्थ और निरोग रहने का सुझाव दिया।

सात दिवसीय योग शिविर के दौरान 21 जून 2023 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर योग को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्थापित होते देखना और महाविद्यालय के योग शिविर में महाविद्यालय के प्रबन्धन, प्राध्यापक साथियों, कर्मचारियों और छात्र/छात्राओं के साथ योगासन और प्राणायाम का अभ्यास करना अत्यन्त सुखद और असीम आनन्द से भरा था। योग वस्तुतः शरीर का आत्मा में और आत्मा का परमात्मा में एकलय-एकाकार हो जाना है। मैं स्वयं भी इसी संभावना के परिप्रेक्ष्य में योग शिविर की ओर उन्मुख हुआ। योग के अभ्यास में योग, आसन एवं प्राणायाम का अन्तर समझना शुरू किया। सच यह है कि शिविर के दौरान समयबद्ध, दिनचर्या और अभ्यास ने क्रमशः शारीरिक जड़ता को दूर कर मुझमें आत्मानुशासन, स्फूर्ति और अतिरिक्त उर्जा का अहसास कराया। सच यह है कि मनुष्य के सारे आंतरिक अवयव किसी ने किसी आसन से व्यवस्थित हो जाते हैं। मैं अब योगाभ्यास और प्राणायाम करते हुए समुचित शक्ति और सजगता का अनुभव करने लगा।

शिविर के पांचवे और छठें दिन योगाभ्यास के लिए

आतुर मन के सम्मुख प्रकृति के आकस्मिक परिवर्तन और वर्षा, अतिवृष्टि ने दुश्वारियां पैदा कीं, किन्तु आत्मानुशासन और प्रतिबद्धता ने अग्निपरीक्षा के बीच योगासन, प्राणायाम और ध्यान का कार्यक्रम पूर्व दिवस की तरह ही छात्र/छात्राओं के सहयोग से सम्पन्न हुआ। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस दिनांक 21 जून 2023 को शिविर के मुख्य अतिथि के रूप में प्रबन्ध समिति की उपाध्यक्ष वर्षा सिंह ने पधारकर योग शिविर को समारोह पूर्वक सम्पन्न कराया। योगासन, प्राणायाम एवं ध्यान के कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि वर्षा सिंह ने छात्र/छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'साधना के दोनों आयाम योगासन, प्राणायाम परस्पर एक दूसरे के पूरक है और समुचित रूपान्तरण एवं स्वयं के शरीर में औषधीय शक्ति जागृत करने के लिए यह जरूरी है कि शिविर से प्राप्त अनुभव का नियमित अभ्यास करें क्योंकि अवसाद के क्षणों में योग का साहचर्य सुख, आनन्द और स्वस्थ जीवन देने वाला है। प्राचार्य प्रोफेसर रवीन्द्र कुमार ने उपस्थित प्राध्यापकों, कर्मचारियों और छात्र/छात्राओं को शिविर में सहभागिता, सहयोग एवं अभ्यास में प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर संयोजक प्रोफेसर आर-बी- सिंह बघेल, प्रो० अमन चन्द्रा, प्रो० वी०पी० सिंह, प्रो० शैलेन्द्र मिश्रा, प्रो० जयशंकर तिवारी, डॉ० दिलीप, डॉ० पवन कुमार सिंह, डॉ० रामिन्त पटेल, डॉ० ममता शुक्ला, डॉ० अरूण कुमार वर्मा, डॉ० राजबहादुर चौधरी, डॉ० सन्दीप शाही, सतीश दीक्षित, प्रधान लिपिक, राजकुमार माथुर, आर०बी० सिंह, अमरजीत वर्मा, पंकज लाल श्रीवास्तव, आकाश दीप, बबलु पाठक, सुरेन्द्र आदि ने योगासन, प्राणायाम और ध्यान सहित सभी अभ्यास कार्य को पूरे मनोयोग से कर शिविर को सफल बनाया। परिचर शंकर दयाल, पंकज आदि ने प्रत्येक शिविर दिवस में उपस्थित रहकर शिविर स्थल की व्यवस्था के प्रबन्धन में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। शिविर संयोजक ने शिविर सम्पन्न होने पर उसकी सफलता के लिए प्रबन्धन, प्रशिक्षक, प्रशिक्षु छात्र/छात्राओं, प्राध्यापकों, कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

प्री पीएच०डी० कोर्स वर्क (अर्थशास्त्र) : आख्या

प्रो० जे०बी० पाल
संयोजक, अर्थशास्त्र कोर्स वर्क

वर्तमान सत्र में डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या द्वारा श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज गोंडा के अर्थशास्त्र विभाग को सर्वप्रथम प्री पीएच०डी कोर्स वर्क 2021-22 को संचालित करने हेतु नामित किया गया। इस सत्र में कोर्स वर्क हेतु 9 परीक्षार्थी सम्मिलित हुए। 16 अप्रैल 2023 से प्रारंभ होकर 60 घंटे की निर्धारित अवधि पूर्ण करने के बाद शोध छात्रों के द्वारा अंतिम दिन शोध प्रारूप का प्रस्तुतीकरण किया गया। जिसका मूल्यांकन विभाग के प्राध्यापक के साथ डॉ० मनीष शर्मा गणित विभाग के द्वारा किया गया। इस कोर्स वर्क को संचालित करने में 20 से अधिक प्राध्यापकों ने विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यान दिए। इन प्राध्यापकों में डॉ० सूर्यपाल सिंह, डॉ० डी०के० गुप्ता, डॉ० जी० एल- प्रजापति, डॉ० बी-पी० सिंह, डॉ० आर० के० अग्रवाल, डॉ० शैलेंद्र नाथ मिश्र, डॉ० जयशंकर तिवारी, डॉ० पुष्पमित्र मिश्रा, डॉ० मनीष शर्मा, डॉ० संदीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ० शैलेंद्र सिंह आदि प्रमुख है। अपने महाविद्यालय के अलावा के०एन०आई० सुल्तानपुर से डॉ० अनिल यादव तथा बीएसएनबी पीजी कॉलेज, लखनऊ से डॉ० पवन गुप्ता के भी व्याख्यान हुए। महाविद्यालय के यशस्वी प्राचार्य डॉ० रवीन्द्र कुमार ने अपनी व्यस्तता के बावजूद भी शोध छात्रों हेतु व्याख्यान दिया। कोर्स वर्क के अंतिम दिन शोध छात्रों के प्रस्तुतीकरण के मूल्यांकन के उपरांत विभागीय प्राध्यापकों का सामूहिक फोटो का भी कार्य संपन्न हुआ। तथा सभी छात्रों को अध्ययन हेतु पुस्तकालय भ्रमण की अनुमति का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

विचार-गोष्ठी : रपट (बी0एड0 विभाग)

प्रो० श्याम बहादुर सिंह
अध्यक्ष, बी.एड. विभाग

दिनांक 25.05.2023 को बी0 एड0 विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कालेज गोण्डा द्वारा "भारत को ज्ञान महाशक्ति बनाने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भूमिका" विषय पर एक दिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन एवं माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पार्चन के साथ किया गया। बी0 एड0 विभाग की छात्राध्यापिकाओं, सुब्रा मिश्रा, सौम्या व मीनू पाण्डेय ने सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो0 हरिकेश सिंह, पूर्व कुलपति जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा, बिहार व विशिष्ट अतिथि डॉ0 सूर्यपाल सिंह, पूर्व प्राचार्य भटौली बाजार डिग्री कालेज, गोरखपुर रहे। बी0एड0 के विभागाध्यक्ष प्रो0 श्याम बहादुर सिंह ने मुख्य अतिथि का माल्यार्पण कर शाल व स्मृति चिह्न भेंट किया। विभाग के अन्य प्राध्यापकों, डॉ0 नीरज यादव व प्रो0 दीनानाथ तिवारी, अर्थशास्त्र विभाग ने विशिष्ट अतिथि को गुलदस्ता भेंट किया, डॉ0 लोहंस कुमार कल्याणी, श्री राजेन्द्र मिश्र ने विशिष्ट अतिथि को गुलदस्ता देकर उनका स्वागत किया। श्रीमती प्रतिभा सिंह ने मुख्य अतिथि को गुलदस्ता भेंट किया। वहीं महाविद्यालय के अन्य प्राध्यापकों प्रो0 अतुल कुमार सिंह, प्रो0 आर0 बी0 एस0 बघेल, प्रो0 बिनोद प्रताप सिंह ने मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि को स्मृति चिह्न व गुलदस्ता देकर स्वागत किया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 रवीन्द्र कुमार का इस कार्यक्रम में पूरा सहयोग रहा। उनका स्वागत प्रो0 अतुल कुमार सिंह, प्रो0 दीनानाथ तिवारी एवं मुख्य नियन्ता, प्रो0 श्याम बहादुर सिंह ने गुलदस्ता देकर किया।

"भारत को ज्ञान महाशक्ति बनाने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भूमिका" विषयक गोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रो0 हरिकेश सिंह, पूर्व कुलपति, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा बिहार ने कहा "भारत को विश्व गुरु बनने के लिए मनुष्य को आत्म गुरु होना आवश्यक है।" "आत्म चेतना को जागृत करके ही विकास और ज्ञान का पथ प्रशस्त किया जा सकता है।

उन्होंने भारत वर्ष की आजादी से लेकर अद्यतन विभिन्न शिक्षा नीतियों पर विहंगम प्रकाश डालते हुए वर्तमान में लागू की गयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को जमीनी स्तर पर उसके मूल उद्देश्य के साथ लागू करने पर बल दिया। उन्होंने अब तक के शिक्षा आयोगों में सबसे महत्वपूर्ण कोठारी आयोग (1964-66) को बताया और कहा यदि ठीक ढंग से इस आयोग के सिफारिश को लागू किया गया होता तो शिक्षा की इतनी 'दुर्दशा' न होती। जैसे आयोग ने शिक्षकों के लिए अनुकूल और पर्याप्त सेवा शर्तें प्रदान करने और उन्हे उन निष्कर्षो को संचालित करने तथा प्रकाशित करने के लिए आवश्यक स्वतन्त्रता प्रदान करने की सिफारिश की थी। स्नातकोत्तर स्तर के अनुसंधान, प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देकर पर्याप्त पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ और वित्तीय सहायता उपलब्ध कराकर शिक्षा में सुधार की सिफारिश की थी। उन्होंने यह भी कहा कि 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी 'कोठारी आयोग' की सिफारिशों से प्रभावित थी। उन्होंने पहली शिक्षानीति-1968 के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी और कहा उसका क्रियान्वयन ठीक से नहीं किया गया। मनसा, वाचा, और कर्मणा के बारे में कहा कि केवल नीति बनाना बड़ी बात नहीं है बल्कि उसका ठीक से क्रियान्वयन कराना है। उन्होने नालन्दा, तक्षशिला के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्र को ज्ञान शक्ति बनाया जा सकता है। मुख्य वक्ता ने यूनेस्को की एक रिपोर्ट-लर्निंग द ट्रेजर विथ इन (Learning the Treasure with in) के बारे में कहा कि शिक्षा के चार स्तम्भ है- (i) Learning to know (ii) Learning To Do (iii) Learning to Live Together (iv) Learning to Be

इसी के साथ छात्र व शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका का वर्णन करते हुए कहा कि यदि शिक्षक दौड़ते हैं तो छात्र चलते है, शिक्षक चलते हैं तो छात्र रेंगते है। शिक्षक रेंगते हैं तो छात्र खड़े होते हैं, शिक्षक खड़े होते हैं तो छात्र बैठ जाते हैं। शिक्षक बैठते हैं तो छात्र सो जाते हैं, और जब शिक्षक सो

जाते हैं तो छात्र मर जाते हैं।

कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ० सूर्यपाल सिंह, पूर्व प्राचार्य., भटौली बाजार डिग्री कॉलेज, गोरखपुर ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का मूल भारत वर्ष की ज्ञान विरासत को नई पीढ़ी के साथ जोड़ना बताया। "भारत वैज्ञानिक उपलब्धियों का देश रहा है और आज का युवा इन उपलब्धियों से अनभिज्ञ है। हमें यह चाहिए कि हम अपनी युवा पीढ़ी को अपने विरासत के बारे में इतना जागरूक कर दें, कि उन्हें पश्चिमी देशों के बजाय अपनी संस्कृति पर गर्व महसूस हो। अपनी भाषा और संस्कृति को सँजोना आवश्यक है ।

मुख्य नियन्ता व बी0एड0 विभाग के अध्यक्ष, प्रो० श्याम बहादुर सिंह ने वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को अद्यतन रहने की सलाह दी। उन्होने कहा कि अधिक मेहनत और अधिक प्रयास से हम विकासशील से विकसित देश बन सकते हैं। विश्व गुरु बनने के लिए हमें अन्य देशों की तुलना में अधिक ज्ञानवान बनना होगा, जिससे अन्य लोग स्वतः ही ज्ञान पिपासा को शान्त करने के लिए ही भारत वर्ष की ओर उन्मुख हो जाएँ।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 रवीन्द्र कुमार ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मानव मस्तिष्क-विकास के वैज्ञानिक पहलुओं पर बल देते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता मातृभाषा में ज्ञान देना बताया।

उक्त कार्यक्रम का संचालन डॉ0 चमन कौर, असि0 प्रोफेसर, बी० एड० विभाग ने किया। इस कार्यक्रम में प्रो० सन्दीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ0 नीरज यादव, डॉ0 लोहंस कुमार कल्याणी, श्री राजेन्द्र मिश्र, श्रीमती प्रतिभा सिंह, प्रो0 अतुल कुमार सिंह, प्रो0 आर0 बी0एस0 बघेल, प्रो0 शिव शरण शुक्ला,, प्रो0 दीना नाथ तिवारी, प्रो० श्रवण कुमार श्रीवास्तव, डॉ0 रेखा शर्मा, प्रो0 शशि बाला, प्रो0 बिनोद प्रताप सिंह, डॉ0 अमित शुक्ला, डॉ0 बैजनाथ पाल, डॉ0 दलीप सिंह, डॉ0 पंकज त्रिपाठी, डॉ0 नीलम छाबड़ा, डॉ0 अनुराग, डॉ0 बृजेश त्रिपाठी, प्रो0 एस0पी0 मिश्र व बी0एड0 विभाग की छात्राएं-सुब्रा, सौम्या, मीनू, श्रेया पाण्डेय, मनीषा, सुनील द्विवेदी, विकास उपाध्याय, राम जीत शक्ति सिंह सहित अन्य प्रतिभागियों ने भाग लिया।



गोष्ठी में पधारते हुए मुख्य अतिथि
प्रो0 हरिकेश सिंह, पूर्व कुलपति,
जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा, बिहार



गोष्ठी में मंचासीन प्रो0 हरिकेश सिंह, पूर्व कुलपति,
जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा बिहार,
प्रो0 रवीन्द्र कुमार (प्राचार्य), प्रो0 आर0पी0 सिंह (पूर्व प्राचार्य)
एवं विभागाध्यक्ष बी0एड0, प्रो0 श्याम बहादुर सिंह



गोष्ठी में मंचासीन प्रो० हरिकेश सिंह,
प्रो० आर०पी० सिंह (पूर्व प्राचार्य),
प्रो० अतुल कुमार सिंह, विभागाध्यक्ष राजनीतिशास्त्र
प्रो० श्याम बहादुर सिंह एवं डॉ० चमन कौर



गोष्ठी में मुख्य अतिथियों द्वारा सरस्वती जी पर पुष्पार्चन एवं
दीप प्रज्वलन करते हुए प्रो० हरिकेश सिंह, पूर्व कुलपति,
जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा, बिहार व
डॉ० सूर्यपाल सिंह, पूर्व प्राचार्य, मटौली बजार, गोरखपुर एवं
प्रो० श्याम बहादुर सिंह, विभागाध्यक्ष, बी०एड०



गोष्ठी में छात्राओं द्वारा
सरस्वती वन्दना प्रस्तुत करते हुए



गोष्ठी में मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए
प्रो० अतुल कुमार सिंह, विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र एवं
प्रो० श्याम बहादुर सिंह, विभागाध्यक्ष, बी०एड०



प्राचार्य, प्रो० रवीन्द्र कुमार जी को
बुके देकर स्वागत करते हुए प्रो० श्याम बहादुर सिंह,
प्रो० अतुल कुमार सिंह एवं प्रो० दीनानाथ तिवारी



गोष्ठी में अतिथि का स्वागत करते हुए
प्रो० दीनानाथ तिवारी एवं डॉ० नीरज यादव

क्रियात्मक शोध संगोष्ठी एवं आनुषंगिक कार्यक्रम : रपट

-संपादक

दिनांक 30 मार्च 2023 को लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय गोण्डा के शोध केंद्र, आईक्यूएसी और हिंदी विभाग और आचार्य नरेंद्र देव किसान स्ना. महाविद्यालय बभनान, गोण्डा के हिंदी विभाग और आइक्यूएसी के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय क्रियात्मक शोध संगोष्ठी आयोजित की गई; जिसके दो अलग-अलग सत्रों का विषय था -'तुलसी जन्मभूमि विवाद : सर्वमान्य निर्णय के उपागम' और गाँव का इतिहास लेखन : स्थिति, स्वरूप और संभावनाएँ।

मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान गुरुमह प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने तुलसीदास के जन्मभूमि संबंधी विवाद पर शोधपरक दृष्टि से विचार करते हुए बाह्य एवं अन्तःसाक्ष्य सहित सभी पक्षों को प्रस्तुत किया। ज्ञातव्य है कि इस विषय पर काफी पहले आचार्य प्रवर दीक्षित द्वारा लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के नेतृत्व में गोंडा, बांदा और एटा का स्थलीय सर्वेक्षण, निरीक्षण करते हुए तर्कसंगत निष्कर्ष तक पहुंचने का प्रयास किया गया था। एक निश्चित तिथि मुकर्रर कर विवादित तीनों स्थानों के प्रतिनिधि दस-दस विद्वानों को लखनऊ विश्वविद्यालय में आमंत्रित कर तीन न्यायमूर्तियों के समक्ष अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए कहा था। परंतु पक्ष प्रस्तुति के क्रम में आए विद्वान सटीक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर सके, परिणामस्वरूप कोई नतीजा नहीं निकला और यह विवाद बना रहा।

प्रोफेसर दीक्षित ने बीती सदी के अंतिम दशक में तुलसी जन्मभूमि संबंधी तर्कों, तथ्यों, सर्वेक्षणों, परिसंवादों के सार तत्त्व को समाहित करते हुए 'तुलसी जन्मभूमि' शीर्षक से एक पुस्तक भी लिखी थी, जो इसके शोधक के लिए आधार पुस्तक के रूप में मान्य है। आचार्य नरेंद्र देव किसान महाविद्यालय बभनान के सुखधाम सभागार में आयोजित संगोष्ठी में विचार प्रस्तुत करते हुए आचार्य प्रवर दीक्षित ने कहा कि हमें निष्पक्ष होकर एक अनुसंधाता की तरह तुलसीदास की जन्मभूमि को तलाशने में जुटने की जरूरत है। इस अवसर पर दोनों महाविद्यालयों द्वारा आचार्य प्रवर दीक्षित जी का अभिनंदन भी किया गया। उद्घाटन सत्र में प्रसिद्ध कवि अवनींद्र नाथ मिश्र 'विनोद' ने ऐसे विमर्शात्मक कार्यक्रम की महत्ता स्पष्ट की।

विषय-प्रवर्तन करते हुए एलबीएस कॉलेज गोंडा के हिंदी विभागाध्यक्ष एवं शोध केंद्र के निदेशक प्रो. शैलेंद्र नाथ मिश्र ने क्रियात्मक शोध संगोष्ठी के उद्देश्य, संकल्पना और महत्त्व को रेखांकित किया। इस अवसर पर उन्होंने घोषणा की कि तुलसी जन्मभूमि के संबंध में विद्वानों के विचार-विमर्श और शोध संबंधी आलोड़न-विलोड़न के उपरांत इसके निर्णय हेतु माननीय उच्च न्यायालय के समक्ष जनहित याचिका दायर की जाएगी और सर्वमान्य निर्णय तक पहुंचने का संवैधानिक प्रयत्न किया जाएगा। इस मौके पर प्रोफेसर शैलेंद्र नाथ मिश्र द्वारा आचार्य नरेंद्र देव किसान पीजी कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर धर्मेंद्र कुमार शुक्ल को भारत के संविधान की मूल सचित्र हस्तलिखित प्रति भेंट की गई और लोकतंत्र के उस महान आधार ग्रंथ को महाविद्यालय में पीठ बनाकर प्रदर्शित करने की अपील की।

एएनडी किसान कॉलेज, बभनान के प्राचार्य प्रो. धर्मेंद्र कुमार शुक्ल ने आगंतुक अभ्यागतों, अतिथियों समेत समस्त शोधार्थियों, विद्यार्थियों और प्राध्यापकों का स्वागत किया। इस अवसर पर बहराइच की डॉ. लतिका सिंह की पुस्तक 'समकालीन हिंदी कहानी : यथार्थ के अभिनव आयाम' और उमाशंकर शुक्ल के ग़ज़ल संग्रह 'काजल काजल हुआ शहर' का विमोचन किया गया। उद्घाटन सत्र में कविवर श्री अवनींद्र नाथ मिश्र 'विनोद' की गरिमामयी उपस्थिति रही।

डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

महाविद्यालय शिक्षक संघ के महामंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने समस्त प्राध्यापकों, शोधार्थियों, अतिथियों, अभ्यागतों के प्रति आभार व्यक्त किया। एलबीएस कॉलेज गोंडा के प्रभारी प्राचार्य प्रो. दीनानाथ तिवारी ने शोध संगोष्ठी के आयोजन की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उद्घाटन सत्र का संचालन क्रियात्मक शोध संगोष्ठी के आयोजन सचिव प्रो. जयशंकर तिवारी, हिंदी विभाग, एलबीएस कॉलेज गोंडा ने किया।

समापन सत्र में 'गांव का इतिहास लेखन: स्थिति स्वरूप एवं संभावनाएं' विषयक संगोष्ठी की अध्यक्षता मुख्य अतिथि एवं वक्ता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सूर्यपाल सिंह ने की। इस सत्र में एल.बी.एस. डिग्री कॉलेज गोंडा के अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. वी. सीएच. एन. के. श्रीनिवास राव, भूगोल विभाग के सेवानिवृत्त प्राध्यापक डॉ मिथिलेश मिश्र, एएनडी किसान कॉलेज बभनान के समाजशास्त्र प्राध्यापक डॉ. आलोक त्रिपाठी, शोधार्थी अनुपमा सहित कई विशेषज्ञों ने अपने शोध पत्र का वाचन किया। डॉ. सुशील कुमार शुक्ल, सेवानिवृत्त प्राध्यापक, प्राचीन इतिहास विभाग ने ऑनलाइन माध्यम से गांव के इतिहास लेखन की महत्ता पर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय उद्बोधन में विद्वान लेखक डॉ. सूर्यपाल सिंह ने कहा कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। हमें शहरों से गांव की ओर लौटना होगा। अगर गांव में अशिक्षित, अशक्त, ज्ञानहीन, तेजहीन लोग रहेंगे तो गांव का विकास कैसे होगा? इस मौके पर उन्होंने यह भी कहा कि दुनिया भर में फैले हुए भारतवंशी अपने मूल की ओर लौटते हैं, तब उन्हें संतोष, शांति और बहुत खुशी मिलती है। उन्होंने यह भी कहा कि इतिहास को केवल राजा-रानी की कहानी नहीं होना चाहिए। उसमें आम जनता का इतिहास होना चाहिए और यह तभी संभव है जब गांव का इतिहास कायदे से लिखा जाए। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. सत्य प्रकाश शुक्ल, प्रभारी, हिंदी विभाग, बभनान डिग्री कॉलेज ने सब के प्रति आभार ज्ञापित किया। समापन सत्र का संचालन डॉ. प्रदीप पांडेय बी.एड. विभाग, डिग्री कॉलेज बभनान ने किया।

इस अवसर पर लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय गोण्डा से प्रो. संजय कुमार पांडेय, गणित विभाग, प्रो. मंशाराम वर्मा, संस्कृत विभाग, डॉ.पुष्पमित्र मिश्र, रसायन विज्ञान विभाग, मनीष शर्मा, गणित विभाग, संतोष श्रीवास्तव, भौतिक विज्ञान विभाग, डॉ.वंदना भारतीय, अंग्रेजी विभाग, डॉ.रवि कांत ओझा, डॉ. मनोज मिश्र, डॉ. डी. एन. पांडेय, अंकित मौर्य, शोभित मौर्य सहित तीन दर्जन प्राध्यापक शामिल हुए। आयोजन में श्री अच्युत शुक्ल, सहायक आचार्य, एलबीएस कॉलेज गोंडा की सक्रिय सहभागिता सराहनीय रही। इसके अतिरिक्त बहराइच से नीरज पांडेय, बेलसर गोण्डा से डॉ. सर्वजीत मिश्र, पयागपुर से राजेश चौबे, उच्च न्यायालय से अधिवक्ता गणेश नाथ मिश्र, गोण्डा जनपद न्यायालय से अधिवक्ता राजेश ओझा, सुरेंद्र मिश्र, मौखिक इतिहास के विशेषज्ञ डॉ. ओंकार नाथ शुक्ल, डॉ.विष्णु शंकर तिवारी, लक्ष्मी नाथ पांडेय, चंद्र प्रकाश पांडेय सहित अनेक सुधीजन शोध संगोष्ठी में सम्मिलित हुए। आचार्य नरेंद्र देव किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय बभनान के प्राध्यापक डॉ अखिलेंद्र कुमार शुक्ल, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. नमित सिंह, डॉ. आलोक, डॉ. विपिन शुक्ल, डॉ. श्रवण शुक्ल सहित दर्जनों प्राध्यापक एवं शोधार्थियों तथा पी.जी. के विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में सहभाग किया।

एलबीएस कॉलेज गोंडा का शोध केंद्र, आइक्यूएसी और हिंदी विभाग दोनों महाविद्यालयों की प्रबंध समितियों एवं प्राचार्यों सहित सभी गणमान्य अतिथियों, आचार्यों, शोधार्थियों एवं शिक्षार्थियों के साथ आयोजन समिति के सभी सम्मान्य शिक्षक साथियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है।





दिनांक 30 मार्च 2023 को ही महाविद्यालय के शोध केंद्र के निदेशक और हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र के द्वारा गाँव सिसई रानीपुर, बभनान में शताब्दी आयोजन किया गया, जिसमें लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ के कृतकार्य हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, ए.एन.डी. बभनान पी. जी. कॉलेज के प्राचार्य प्रो. धर्मेन्द्र कुमार शुक्ल सहित कई महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वों की गौरवमयी उपस्थिति संभव हुई। विदित हो कि 30-31 मार्च 1922 को देश की स्वतंत्रता के संबंध में विचार-विमर्श हेतु सिसई रानीपुर गाँव में एक राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ था, जिसमें पं. जवाहर लाल नेहरू, विजय लक्ष्मी पंडित, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, फ़िराक गोरखपुरी जैसी शख्सियतें उपस्थित हुई थीं। इस सभी महानायकों के सम्मानार्थ यह शताब्दी आयोजन किया गया। इस आयोजन में अटल विश्वास की प्रतीक पूज्य जननी स्व. उर्मिला देवी की पावन स्मृति में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर स्वस्थ लोकतान्त्रिक प्रक्रिया एवं सुशासन का प्रतीक 'अटल चबूतरा' का लोकार्पण किया गया। प्रो. मिश्र की संकल्पना के मुताबिक पवित्र राष्ट्रध्वज, भारतीय संविधान के साथ समस्त राष्ट्रीय प्रतीकों को इस चबूतरे पर स्थान दिया जाएगा। राष्ट्रीय प्रतीकों का यह अधिष्ठान अपने परिवेश सहित देश और समाज के सभी नागरिकों में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करेगा।

इसके साथ ही प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र के पूज्य पिता मानस प्रेमी स्व. विश्वनाथ मिश्र की स्मृति में 'श्रीरामचरितमानस वाटिका' का शिलान्यास कर शुभारंभ किया गया। प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र ने बताया कि प्रस्तावित मानस वाटिका में रामायण और श्रीरामचरितमानस में वर्णित 182 पौधों-वृक्षों, 27 नक्षत्रों और नवग्रह वाटिका सहित पंचवटी के पौधों का रोपण कर एक अभिराम दर्शनीय वाटिका निर्मित की जाएगी, जो रामकथा के पर्यावरणीय पक्ष का जीवंत स्मारक बनेगी।

इस अवसर पर प्रो. मिश्र के निवेदन एवं प्रस्ताव पर हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के सभापति विद्वान आचार्य सूर्य प्रसाद दीक्षित ने 'हिंदी एकीकृत परिभाषा कोश' के संपादन का दायित्व स्वीकार किया। उक्त कार्यक्रम में आचार्य सूर्य प्रसाद दीक्षित द्वारा एस. एन. शर्मा संपादित 'सिसई रानीपुर के सौ साल' शीर्षक एक स्मारिका लोकार्पित की गई। इस स्मारिका में स्वतंत्रता पूर्व गाँव की सांस्कृतिक-राजनैतिक-सामाजिक परिस्थिति को प्रस्तुत किया गया है।

भगवद्गीता की सूक्तियाँ

- अनन्त चैतन्य की व्यापक चेतना युक्त योगी अपने आप को सब में तथा सब को अपने आप में देखता है, वह सर्वत्र समदर्शी होता है ।
- हे अर्जुन ! अपने जैसा ही सुख तथा दु.ख को जो सब प्राणियों में समान भाव से देखता है अर्थात् अपने समान ही दूसरो के सुख दुख को अनुभूति करता है, वही परमयोगी माना जाता है ।
- हे महाबाहो | इसमें सन्देह नहीं कि मन बड़ा चंचल है, इसका निग्रह कर सकना कठिन है । किन्तु हे कुन्तीपुत्र अभ्यास (एकाग्रता की सतत साधना) और वैराग्य (विषयों के प्रति विरक्ति) से यह वश मे आ जाता है ।
- हे तात । शुभ कर्म करने वाला कभी दुर्गति को प्राप्त नही होता ।
- विद्याओं में अध्यात्म विद्या ही सर्वश्रेष्ठ है।
- हे पाण्डव ! जो सभी प्राणियों के प्रति निर्वैर (वैर से रहित) है, वही मुझे प्राप्त कर सकता है |



21 मार्च 2023 को मुख्य अतिथि
डॉक्टर एस. एन. ओझा संबोधित करते हुए



प्रशिक्षक आशीष शर्मा परिवहन का प्रशिक्षण देते हुए



मरीज के परिवहन का प्रशिक्षण प्राप्त करते स्वयंसेवक



सर्वश्रेष्ठ पुरुष स्वयंसेवक सौरभ कुरील और
सर्वश्रेष्ठ महिला स्वयंसेविका पूनम



महाविद्यालय के शोध केंद्र द्वारा आचार्य नरेन्द्र देव किसान पी.जी. कॉलेज बभनान, गोंडा में संपन्न क्रियात्मक शोध संगोष्ठी



संगोष्ठी का प्रारंभ



शोध संगोष्ठी में ए.एन.डी. कॉलेज बभनान के प्राचार्य को हस्तलिखित भारतीय संविधान भेंट करते शोध केंद्र के निदेशक प्रो. शैलेन्द्र नाथ मिश्र